'राधा' सूं 'पुजापो' तांई री काव्य जात्रा में भलांई सिल्पगत बदळाव आपांनै निगै आवै पण वांरै रचनात्मक मूल्यां रै 'इम्प्रेशन्स' में कठै ई फोर-बदळ नी दीखै। हां, भौतिकता रै खोड़ (जंगळ) रो डरावणोपण जोसी रै कवि नै ऊमर रै इण पड़ाव पूगतां, ज्यादा 'प्रोडेक्टिव' बणा देवै। भौतिकता रै प्रसार रा विरोधी नी है—जोसी पण, वै उण विरती रा घोर विरोधी है—जिकी मिनख री देह सूं काळजो काढ लेवै। वांनै लागै कै विग्यान री वेगवान विरती लोगां रा काळजा काढ रैई है अर वांरी कवितावां रा हथियार लोगां नै काळजा विहूण होवण सूं रोक रैया है। वांरी इण समस्टि समझ नै ऊपर-ऊपर सू जोयां लागै कै वै कोई रूपवादी सौंदर्य बोध रा कवि है पण वांरी रचना मे कठै ई व्यक्तिगत 'आणंद अर धाप' जैड़ी प्रवृति नी है। वै समाज सागै प्रकृति रै जड़-चेतन रो गनो (रिस्तो) दर ई नीं भूल पावै। ओ ई वांरो सौंदर्य बोध है।
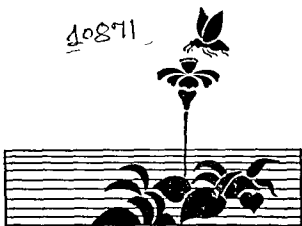
राजस्थानी सिरजणधारा-अेक

सत्यप्रकास जोसी री कवितावां
सम्पादकः चेतन स्वामी

प्रकासक कांनी सूं

राजस्थानी भासा, साहित्य अेंव संस्कृति अकादमी, बीकानेर री थरपणा रै पछै सूं ई पोथी प्रकासण रै मतै उदासीन रवैयो रैयो। अकादमी री नूवी कार्यकारिणी अर सामान्य सभा इण रवैयै माथै गंभीरता सूं विचार कियो अर चालू रोकड़ बरस में की पोथ्यां छापण रो निरणै लियो है। इणी निरणै रै तहत राजस्थानी रा चावा-ठावा कवि सत्यप्रकास जोसी री टाळवीं कवितावां री आ पोथी 'निजराणो' पाठकां नै निजर कर रैया हां।

राजस्थानी समकालीन कविता रै टेनर में श्रीजोसी अेक नूवी भाव भूमि त्यार कीवी है जिकी कविता री असल पिछाण रै रूप आपारै साम्है है। जोसी री भासाई सिल्प तो घणो रळकवां है। राजस्थानी अकादमी श्रीजोसी री टाळवीं कवितावां रो ओ संग्रह 'राजस्थानी सिरजण धारा' प्रकासणमाळा रै पैलड़ै पुस्प रै रूप प्रकासित कर रैई है। सिरजण धारा योजना में केई दूजी पोथ्यां ई बेगी ई पाठकां रै हाथां में होवैला।

पतियारो राखां ओ 'निजराणो' पाठकां नै दाय आवैला।

वेद व्यास
छारडी, 90 अध्यक्ष
राजस्थानी भासा, साहित्य अेंव
संस्कृति अकादमी बीकानेर, (राज)

विगत

संपादकीय दीठ

फगत इहै ई क्यूं, अेक मोटो राजस्थानी पाठक वर्ग है जिको सत्यप्रकाश जोशी री कवितावां बांच बांच नै फेर बांचै अर जिनी बार बांचै निरवाळी भणमण हेमाणी अवेरै। पण निजू क्षणां में जोशीजी री कवितावां रा नैना टुकड़ा आपरी सिमरण रा नगारा घमकावै। ऊमर रै परवांण म्हारा अरथ संदर्भा रै सागै ऊभी होवै—अे कवितावां। इणनै अेक कवि री घणी मोटी अर गीरबैजोग हासल कैवो तो कठै ई अणगत बात नीं होवै।

जोशीजी कनै कविता रो जिको 'क्लासिक फॉर्म' है वो नीं 'भाव' सूं जुदा है, नीं 'काम' सूं अळगो। कविता में जिकी खास चीज होया करै—भावगी सभाव, उणरी अवर-पकड़ जोशीजी कनै खूब-खूब। लयकारी रै वर्ग, आनुप्रासिक बंधेज तो थांरी हरेक कविता री पंगत-पंगत में सैंचरू होवै। लोक मानस रा इण कवि कनै आपरी सबदा-वळी है-जिकी जमीन रा लोगां सूं जमीन री वाणी में बोलै-बतळावै।

'राधा' सूं 'दुकाळो' तांई री काव्य यात्रा में सगाई सिलसिलेवार बदळाव आवतां जिकै आवै पण वांरै रचनात्मक मुल्कां रै 'इन्वॉल्वमेन्ट' में कठैई थोर-बदळ नीं दीसै। हां, मौलिकता रै लोप (अवळ) रो सत्यप्रकाश जोशी रै कवि नै ऊमर रै इण पड़ाव पूगणां, ज्यादा 'कौरेजिव' बणा देवै। मौलिकता रै प्रसार रा विरोधी भी है जोशी-पण, वै उण विरणी रा चोर विरोधी है-जिकी सिरजण री देह सूं काळजो काढ लेवै। वांनै माथै वै सिद्धान्त री बेवकान जिण्नी लोगां रा काळजा काढ दैई है अर वां री कवितावां रा हथियार लेन्ना वै

काळजा विहूण होवण सू रोक रैया है। वांरी इण समष्टि समझ नैं ऊपर-ऊपर सूं जोयां लागै कै वै कोई मनवादी सौंदर्य बोध रा कवि है पण वांरी रचना मे कठै ई व्यक्तिगत 'आनंद अर धारा' जैड़ी प्रवृत्ति नीं है। वै समाज सागै प्रकृति रै जड़-चेतन रो मनो (रिश्तो) दर ई नीं भूल पावै। ओ ई वांरो सौंदर्य बोध है।

काव्यकला मे मानवीय मूल्यां रा हिमायती जोसी, राग-द्वेष हरख-सोग नै काम-क्रोध जैड़ा मनोविकारां नै मिनखरी सभ्या सू जोड़'र देखै अर वांरै बीचला अन्तर्विरोधां री पड़ताल ई 'अहंवादी' हांयनै नी करै। पांच दसकां रै काव्य जीवण मे जोसीजी रै कवि नै 'व्यक्तिवाद' सू कोई खतरो नी होयो, वांरी आस्था अर सौंदर्यबोध दीठ हरमेस नैतिक-सास्वता जीवण मूल्यां रै पख मे रैई। सत्यप्रकास जोसी अेक लांबै अर्सै तांई मंच रा चावा कवि ई रैया है इण वास्तै 'मंच संस्कृति' रा खतरा सू वै ई गेईज (ग्रसित) सकै हा पण अैड़ो कुजोग नी मळियो अर वै आपरै कवि रै ऊजळै अर अखोट मिनख री रिछ्या करनी। कैयां जावै कै कला रै मानवीयकरण सू मिनखां री भावनावां नै तिरपती मिलै। अेक कळा-जीवी सारू इण सू मोटो निजराणो काई होवै, कै वो आपरै काम सू भावनावां रो विकास करै, जिको हर भात-समाज रै विकास सूं जुड़ियोड़ो होवै।

लगै टगै आजादी रै पछै सूं सरू होई जोसीजी री काव्य जात्रा। हिन्दी-राजस्थानी में छुट-पुट गीतां रै सागै ई वां रो राजस्थानी जगत मांय धमाकैदार परवेस होयो। धमाकैदार इण नतै कै आजादी रा गीत गावणवाळा कवियां रै प्रयोजण धरमी काव्य मांय कविता आपरी पिछाणगत अनुरंजनी चेंरै नैं कठै ई लुकायां बैठी ही—'न कान्तमपि-निर्भूषणं विभाती वनिता मुखम्'(वाल्ही धण रो मुंडो ई बिना सिणगार तो अलूणो)। मंच रै खंदोळयां चढनै कविता उण वगत फगत भाव नै भूल विचार नै झाला देय रैई ही। या पछै की लोग पारंपरिक वीर रस कै सिणगार रा ई रसिया बण रैया हा। राजस्थानी कविता जिण भासा अर मुहावरै रै ढब ढळ रैई ही उण नैं 'समकालीन समझ' अर 'तरास' रै गेलै लावण में जोसीजी रो सिरै हाथ रैयो। मंच जोसीजी रो ई कीं दिनां तांई माध्यम रैयो पण वांरै खातर कविता फगत मन विलमाऊ रिगल नी रैई, वै इण नै महताऊ त्रियेशन मान्यो अर मंच रो इस्तेमाल ई उण दीठ सूं करयो।

स्वर रो प्रभाव घणो चिमतकारी नै वसीकरण जैड़ो होवै। विचारक कॉडवेल रो ओ मानणो वाजव ई है कै 'कविता रो सनमन उपेजो करण वाळी मैणत सूं ई होवै।' कविता मिनख नै संस्कारित करै अर उणरो

दैवारिक में भौतिक विकास ई करें। मिनख रो मेंणत सूं रिस्तो नैं मैंणत रो लय सूं संगोठो अर लय कविता री सिरें जरूत। जोसीजी कविता रैं इण आदू गणित नैं बिसरायो नीं। लोक री सांस्कृतिक चेतना नैं जगावण साऊ जिण ढब अर सिल्प री जरूत होवैं वी जरूत नैं जोसीजी खास-खास मंमूस कीदी अर लोकगीतां रैं सलूणैं सिल्प नैं आपरी कविता रो मुहावरो बणायो। लोक साहित्य री अद्भुत सम्प्रेसणीय सगति नैं ओळखी अर उणरा वैं तरव जिका समाज नैं समाज रा आखा कारज बौपारां सूं संमुडं करैं—जाण लेंवणा किणी साधना सूं कम नीं है। लोकगीतां रैं सिल्प नैं अंगेज लेवणो तो फगत चतराई रो काम होय सकैं पण वा री 'पूग' (एप्रोच) री बुनियाद लग पूगणो सहज नैं सहळो काम नी है। लोकमानस रैं इण चितैरे नैं लोकगीतां रो पॉवरफुल कन्टेन्ट हर रचना मे अखरावणी देवतो रैयो।

'राधा' भारतीय साहित्य री बेजोड काव्य क्रिति है। यूं तो राधा क्रिसण री हेजाळू वायेली है पण जद वा आपरैं 'कमगर' हाथा सूं भांत-भात रा घरू काम करै तो मैंणत री पूतळी ई लागैं अर मैणत नैं ई वा पूजा जाणैं। श्रम रै पछै रो सुख, उणरैं रूं-रूं सूं ढुळैं। सुख-सौरप साऊ राधा अेकली धणियाणी बणन रो मतो नी राखैं। क्रिसण जे सुख रो लेरको है तो, वा चावैं इण लेरकैं सूं आखो जगत आपरा प्राण सरसावैं। राधा आखा जगत नैं आपरैं आवगैं सांस्क्रतिक सरूप सागैं सरस-सलूणो देखणी चावैं। क्रिसण सूं जगत नैं विध्वस सूं बचावण साऊ हाथ जोड-जोड नैं जुध जैडी आसुरी विरतियां परिया राखण री टैर ई इण काव्य रो असली मकसद है। क्रिसण सिरजणकारी सगतिया है नैं राधा जीवण रा सांस्क्रतिक मोल। जोसीजी रैं इण काव्य सूं जिकी अमर 'पारस्थितिकी' चेतावणियां प्रगासीजी है, वैं आज पल पल किती जरूरी बणती जा रैई है इण नैं आपा सहज ई समझ सकां।

'दीवा कांपै क्यूं' रा सगळा ई गीत सत्यप्रकास जोसी री सरूआती पिछाण रा लोवड़ा थंभ है। कविता री सासताई रा पक्का प्रमाण औ गीत मिनख री उण अबोट धणियाप रा गीत है जिकी निरजीव बीजा मे प्राणां रो सचार करैं नैं जिकी इण रुपाळैं संसार री धड़कना नैं आपरैं माय धड़कावैं। गीतां रैं जम रा बखाण तो चावैं करियां ई जावो क्यूं कैं गीत ई तो होवैं जिको रैंणादे रैं खोळैं सोनल भांण जलमावैं अर अंधारैं री ओवरियां ग्यान री पीलजोत जगावैं। सबद, विचार, भावनावा री भेळप सूं कविता रो जलम होवैं। हिड़दैं अर मगज री ताळमेल जठैं कठैं ई टूटैं, कविता रो अेकांगी होय जावण

री सतरो ई वध जावै। सबद छिणी ई पोरवां री आंख सूं मूरत नै घड़ै। गीत जिको अणघड़ पड्यो है, गीत जिको कैयो नीं गयो है, सबद ई तो उण मून नै मांगै, अणघड़ नै तरासै। अमूरत नैं परगासण वाळो सबद जद हिड़दै अर मगज रा देळी-दरुजा डाक नैं अवतरै तो गीत रैं उणियारै आपारैं सांम्है होवै। गीत जिण में मानखो जीवै जलमै, गीत जिण सूं समाज जागै। इण खातर जोसीजी कैवै—'आवो रे कविया म्हारैं साथ रे, जुग नैं नूवैं गीतां सूं घेरल्यां।'

'बोल भारमली' है तो अेक इतियास कथा पण इणनै खाली इतियास री घटणावां रो बखाण ई नीं कैय सकां। नीं ई इण नै सन-सम्वत रैं मतैं सतरवीं सदी रैं राजस्थान इतियास री अेक घटणा ई कैय सकां। भारमली जोसी रैं कवि री 'नारी' है अर उण सूं मिळणवाळा पुरस ई जोसी रा पुरस पात्र है। बोल भारमली सिस्टी री धड़त करणवाळी नारी रा सवालां रो काव्य है। वैं सवाल जिका भूतकाळ सूं अवार ताईं पड़ूतर री उडीक में ऊभा है। नारी अर उणरी मरजाद, पुरस अर उणरा करतब, इण रैं ओळै-दोळै ई इण काव्य री कथा पूरी नीं होय जावै। भारमली रा मगळा बैवहार रैं पछै जिकी भारमली पाठक रैं मन में जनमैं बा जोसी री 'राधा' है, 'भारमली' है, 'जयती' है, नैं कवि री सर्वांग मानवीय स्त्री पात्र है। जोसी री फगत इण अेक पंगत में नारी रो मानवीकरण होय जावैं कै—'थे दूजी कुदरत हो विधाता री, वैसी कुदरत री खांमियां पूरी करणवाळी।'

'गांगेय' महाभारत रैं पात्र भीस्म माथै काव्य है, पण 'राधा' अर 'बोल भारमली' रैं ज्यूंई नर-नारी सम्बन्धां रो पड़ताल ई इण काव्य रो अभीस्ट है। कवि साहित्यकार समाज निरपानी ई होया करै है। जन विरोधी संस्कृति, सड़ी व्यवस्था रो प्रतिकार ई उणरो सरध होवै। समाज में नर अर नारी दोय गमनिया रैं ज्यूं होवैं पण नारी रैं माथै लगोलार मारो बरताव कियो आवणो अेक मोटी सगति री अवमानना है—जिणरो परिणाम महाभारत रैं रूप में सांम्है आवै। महाभारत में भारतीय समाज रैं विकास अर बदळाव रा भोग ई सांधै। कविता री मनोभूमि ई समाज री मावनी अर बारली मतावी सूं न्यारी नीं होवै-उण रै कथा आरम्भवाळा आभा प्राव समाज री स्थितियां नैं ई प्रदर्सित करैं, नर-नारी रैं मनमन री कथा महाभारत, विन्यास रैं इण जुग पुरसा ई जिणरी प्रासंगिक है, वो बतावणो ई कूड़ अेर दैवां ई बोलसीयो रोज ई महाभारत रा अबारर प्रसंग नै करम दुख देखणा। मरती वेळा आदेस मात्र भला री निरवाण करै, वो निरवाण ई वा रो मारी [illegible] री करवाय नै बरोट दिखावां होवै।

तकनीकी जुग अर मिनखां रै मनमन रो काव्य है *'आगत-अणागत'*—यांत्रिकता रै सोड मे मिनख जैड़ो संवेदणसीळ प्राणी गमतो जाय रैयो है। मिनख री आंतरिक पिछाण, उणरो सौंदर्य बोध, आपोपरी रो लगाव, दीठ-मीठ रो फरक, *रसो कीं बदळ जावैला तो* कांई मिनख फगत अडवै ज्यू होयनै रैय जावैला? इणरै चलतै समाजू संस्थावां टूटती ई जावैला तो उणरी छेकड़ली परिणति कांई होवैला? *अैड़ी ई चितावां इण काव्य मे दीठीयत होवै। मिनख इण* भौतिक दौड़ (जिकी जरूरी होवै पण उणरो अणूतो अटावरोपण मिनख नै खडित ई करै) मे भाजतो उपयग्यो होवै अर अमूझ'र बिसांई *सावण सारू कैवै: 'छिण अेक धरती नै थामो-थामो म्हनै उतरणो है।'*

'आहूतिया' आपरी तरै रो अेक निरवाळो काव्य है। राजस्थानी मे प्रक्रति, प्रगति, भगति, नीति निरा ई काव्य लिखीज्या पण *'सम्बोधनात्मक' सैली मे लिख्योड़ी अे कवितावां किणी ई भासा मे अेक* अद्भुत प्रयोग है। कवि समतामई संसार सारू प्रक्रति अर समाज सू आपसी गनो राखणवाळी हरेक चीज, हरेक भावना रो आव्हांन करै। *कवि री चेतना सू ओ ई प्रगासीजै कै सौंदर्य मिनख री चेतना* सू अळगो होय जावैला तो उणरो अरथ कांई रैय जावैला? मिनख सू जुड़्यां ई भौतिक सौंदर्य-मोला मे वदळै। मिनख रा कारज अर *उणरै सौंदर्य बोध मे गैरो रिस्तो होवै। इण खातर ई तो कवि चराचर* नै आहूत करै अर कैवै-आवो, 'इण ब्रह्माड मे सिरजा देव सिसटी रा जुग!'

प्रेम, भगति, आराधण री कवितावां रो ई दूजो काव्य है 'पुजापो'। प्रेम मे निर्वैयक्ति री भावना, भगति में लोकमंगळ री भावना होवै तो कविता 'मतर' री ओपमा पावै। इण आराधण में रिसी रै सैंजोड़ै ई होवै कवि। *वैदिक सूक्त रो रहस ई सहज समझ में आवै। वाणी रै* इण निराकार साच नै कविता, मतर, सम्मोहन चावै ज्यू अभिहित करो, उणरो मूळ लक्ष्य तो अेक ई होवै—लोक कल्याण री भावना। *जोसी रो सनेसो इण बात सारू कै विणस री परविरतियां नै फगत प्रेम* सूं ई ढाबी जा सकै—अठै ओ सनेसो घणो समीचीन प्रतीत होवै। संसार अबार जिण स्थितिया सू रूबरू होय रैयो है वै कितरी घातक है—इणरी कल्पना कवि जैड़ो जुगद्रस्टा नी करैला तो कुण करैला।

सत्यप्रकास जोसी रो मूल्यांकन आपां राजस्थानी रै ऊजळै भविस रै रूप में कर सकां हा। राजस्थानी कविता रै इण विराट कवि रै स्वास्थ्य री मंगळकामना करां।

□ चेतन स्वामी

काईं इण विग्यान रा जमाना मे मिनख रो अंत होयग्यो ? काईं विग्यान मिनख री देह सूं उणरो काळजो काढ लियो अर उणरी भावना रो विणास कर दियो; जिण सूं कै आज मिनख रै वास्तै कविता री कीं दरकार कोनी। काईं मिनख रै जीवण सूं आज दुख, दरद, हरख, नेह, उछाव, आणंद, क्लेस, संताप अर मोह-परीत इत्याद भावनावां लोप होयगी, जिको आज कविता रो जमानो कोनी। हर जमाना रो मिनख आपरै सारू जमाना रै मारफत ई कविता निरमाण किया करै।

राधा

1960

• पैलापैल • बदनामी • ब्याव
• बिदा •

पैलापैल

पूंन पालकी में बैठ्या
मुरली रा झीणा गुर
म्हारा नांव नै
कूंट-कूंट में गावै
कण-कण रा कानां में गुंजावै,
जमना री लैरां म्हारा नांव नै कळकळावै,
ठेट समदर री छोळालग पुगावै,
रूंखां रै पांनड़ां रा होठ
म्हारा नांव नै गुणगुणावै
कोयल नै सुणावै

पण पैलापैल
सुगणी जसोदा रा जाया !
थूं म्हारो नांव पूछियो;
लजवंती लाज
म्हनें दुलेवडी कर न्हाखी
दो आखरां रो भोळो-ढाळो नांव
म्हारै सूखतै कंठां रै
पोयण में भंवरां ज्यूं अटकग्यो,
म्हारै होठां री लिछमण-रेखा में
बैण जानकी दाझण लागी

थूं म्हनै घणी-घणी बातां पूछी
पण सुगणी जसोदा रा जाया !
म्हारै सुरंगै गालां रै कसूंमल म्हैला सूं
लजवंती राणी
नी उतरी सो नी उतरी

आज अणचितारघां
अणबुलाई, अणचीती सी
अलेखू वार
दौड़-दौड़ आऊं थारै दुवार
तो ई नीं अछैही आस पूरै
नी सवाई साध पूरै
रे म्हारा कान्ह कांमणगारा !

पण पैलापैल
अचपळा कान्ह कंवर !
थू म्हारो अबोट पुणचो पकड
सुरंगी जमनां रै कांठै
उण कदब रूंख रै पसवाड़ै
म्हारै नैणा मे टुग-टुग जोवण लागो,
थारै कोडीलै हाथ रो
निवायो परस
म्हारै रुं-रुं मे
झणकारां रा झाला मारण लागो
रगत नाड़ियां में
जाणै पाळो जमग्यो,
आखै पंथ, आखै मारग,
पगा में भाखर रो भार लिया
घणी दोरी चाली

आज थारै-म्हारै परसेवा मे
कोई भेद कोनी,
माठ कोनी,
थनै म्हारी पलकां सूं
बाव ढुळाऊं
तो म्हारो पसीनो तो आप ई सूख जावै

पण पैलापैल
हेम रै उनमान
[illegible]

म्हारा पसीना में जांणै आदण लाग्यो
थूं पीतांबर सूं
म्हनैं बाव करतो ई गियो
अर म्हारो पसीनो
नैणां-नैणां, पलकां-पलकां
अर रुं-रुं सूं
उफणतो ई गियो

आज जमना रै सगळै कांकड़
डांडी रै माथै
मुळकती मिमजरियां
जांणै म्हारी मांग रो चितराम

पण पैलापैल
म्हारी मांग सजावण नै
अमर सुहाग रै खातर
थूं मिमजरियां रा मोती लायो,
तद म्हैं छळगारी लाज रै फरमांण,
माथो ऊंचो कर लीनो;
डांडी-डांडी मिमजरियां रळगी,
कांकड़-कांकड़ मोती रळग्या

आज अंबर रा लिलाड़ माथै
चळापळ तारां री
अणगिण टीकियां
पळपळावै, चमचमावै, मुळकै

पण पैलापैल
जद थूं म्हारै आटीलै भंवारा बीच
रमनाळै हींगळू री
टीकी देवण लाग्यो
तो म्हैं छळगारी लाज रै फरमांण
माथो नीचो कर लीनो
म्हारी सुरगी मेंहदी रै उणियार

आज रूपाळो ऊसा राचणी
म्हारी चोळमजीठ रै उणियार
आज गवरल सिझ्या राचणी

पण पैलापैल
जद थू सांवळै हाथां सू
म्हारै गोरै हाथा री
गुलाबी हथेळियां में
मेहदी मांडण लाग्यो
तो म्हैं छळगारी लाज रै फरमाण
म्हारी मूठियां भीच लीनी
अर वा सुरंगी मेंहदी
टळमळ जमना री
छोळा में रळमिळगी

आज विणखड़िया रा फूल राता,
आज रोहीड़ै रा फूल राता,
आज गुलाब रा फूल गुलाबी,
जाणै म्हारै कूकूं पगल्यां रै उणियार
जाणै म्हारी सुपारी सी
अेडी रै जावक रो चितराम

पण पैलापैल
जद थूं सांवळै हाथा सूं
म्हारी गोरी अेडी
अर म्हारै गोरै पग री
सुरंगी पगथळी में
म्हावर लगावण लागो
तो म्है छळगारी लाज रै फरमाण
म्हारा पगां नै संवेट
घाघरा रै झीणं घेर में
लुकाय लीना
अर वा म्हावर
फूलां-फूलां घुळगी ।

बदनामी

छानै क्यूं मिळू
म्हारा कांन्ह छांनै क्यूं मिळू ?

थारी मुरली
म्हारा ई तो नांव नै
धरती आभै मे सरसावै;
बरस जुगां री छेली माठ लग पुगावै;
कुण नीं मांनै ?
कुण नीं जांणै ?
तो छानै क्यूं मिळूं
म्हारा कांन्ह छांनै क्यूं मिळूं ?

नगरी-नगरी, हाट-हाट, गळी-गळी
लोग म्हनै जांणै,
थारी-म्हारी सूरत पिछांणै
अेक जीव रा अे दो इदका रूप
कुण राधा, कुण गोपाळ !

ओ जमना रो नीर अथाग
थारा नै म्हारा भेळा भाग
रूंखां रा सगळा पांन थनै जाणै,
म्हनै हर फूल हर कळी पिछांणै,
तो छांनै क्यूं मिळूं
म्हारा कांन्ह छांनै क्यूं मिळू ?

वो आभो धरती नै चूमै
यै जमनां री लैरां सागर सूं लूमै

वो पूंन कदंब रा कांनां में
प्रीत रा मीठा.बोल सुणावै,
वो पुहप सौरभ रै समचै
आपरा आलीजा भंवर नै
घणै मान सूं बुलावै,
वै भंवरा फूलां रै कांनां मे
आपरी प्रीत रा गीत गुणगुणावै
अै सगळा थारै-म्हारै इज हेत रा रूप अनेक,
थारी-म्हारी प्रीत री रीत रा भाव अनेक,
थारी प्रीत म्हनें अमर करै
थारी प्रीत म्हनै पूरण करै

तो छांनै क्यूं मिळू
म्हारा कांन्ह छानै क्यूं मिळू ?

ब्याव

नी कांन्ह ! नी
थारो-म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !

म्हैं विरज री अेक गूजरी
थारी जांन री किण विध खातरी कर सूं !
दायजो कठा सूं ला सूं !
जणा-जणा रो मन किण विध राख सूं !
सासरा नै किंयां केवट सूं !
नीं कांन्ह नी
थारो-म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !

दूर देस रा राजम्हैला में
कोई राजकंवरी
सपनां रो संसार सजाती
थारी मांग उडीकती होसी
थारा चितराम कोर-कोर
दूतियां नै दिखाती होसी;
कांमण करती होसी

थारा राज सूं
मोटा सिरदारां री जांन
आगलै गढ़ां पूगसी,
साम्हेळो जुड़सी
डेरा लागसी
नगर री ऊंची हवेलियां रै
झरोखां सूं
कांमणियां फूल गेरसी

नगारां री घोक
भर मोत्यां री उछाळां रै बीच
थूं किणी गढ़ रै
तोरण बांधसी
मां बावल रै गाढ़ा हेत में पळी
कोई लाडली
झुर-झुर पीहर री माटी सू
विदा लेसी;
अर मुड़-मुड़
आपरा घर-दुवार नैं,
साथ-संग नैं,
गळी-गवाड़ नैं
पिणघट, बाग नैं
रूखां नैं, वेलां नैं, फूलां नैं
सूवा नैं, कोयल नैं, भंवरा नैं
छळछळाता आंख्यां
देखती-देखती पराई हो जासी ।

नी कांन्ह ! नी
थारो-म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !
केई देसां रै टणका राजवियां री
थटाथट भरी सभा में
लाज में सिवटथोड़ी,
हिरणी-सी डरथोड़ी,
कोई बड़भागण
थारै हाथां हरण करवा री
कांमना करती होसी
आंधी रै वेग
बतूळिया रै भंवर में
थूं उणनैं उडा लासी
परणवा रा कोडीला दूजा पतसाह
आपरी मांग सुसता देख,
रीस अर अपमांन री झाळां खदबदता,

थारै लारै
अजेज वार चढसी;
पण थू आपरै आपा रै पांण
पूनगत रथ माथै हाकां-धाकां
उण कवारी नै
थारै रंग म्हैलां ला विठासी

नी कान्ह ! नी
थारो म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !

वीनणी तो जीतणी पड़ै
गऊ-सी किणी किन्या नै
जीतवा सारू
केई राजा भेळा होया होसी
सै आप आपरै
भुजदंडां रो वळ आकसी
कोई धनख तोडणो पड़सी,
कै कोई निसाण साधणो पड़सी,
कै वळै कोई अणहोणी करणो होसी

थारी भुजावां रो वळ
कंवारी किन्या रै
घरवाळा रो प्रण पूरो करसी;
अणजांण किन्या
अणजांण सूरवीर र गळा मे
वरमाळा पूरसी;
पुरोहित मंत्र उचारसी,
कड़ूंबो मंगळ गावसी,
मावड़-वाबल हरख रा गीत गवासी,
खुसियां रा ढोल वजासी;
छेला मौरत ताईं
हारधोड़ा मनहीणा राजा
घमसांण मचावसी
वांनै भरपूर हरायां

थारै आंगणियै रिमझिम करती
लाडी आवसी

नी कांन्ह ! नी
थारो-म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !

थारी-म्हारी वात ई न्यारी,
म्हारै-थारै प्रेम री जात ई न्यारी,
आपां अेक-दूजा सू
अणजांण कठै ?
स्रिस्टी रै पैलै दिन सू
अेक-दूजा नै ओळखां,
आपां रो ब्याव किया होवै ?
म्हारै आगणियै लाखा नै
साई दे क्यू बुलाऊ ?
क्यू स्वयंबर रचाऊ ?
क्यू हरण रो सांग कराऊ ?
नारी रै माथै री मांग
पुरख रै वळ सू क्यू तोलू ?
म्हारी प्रीत अबोली, म्हैं क्यू बोलू !

नी कान्ह ! नी
थारो-म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !

परण्या बिना ई
हर सिझ्या
म्है थारी बाट निहारी,
लोगां रा बोल सह्या,
घरवाळां रा घणा घणा तोख उठाया
तो ई म्है नी हारी रे कान्ह ! नी हारी !

थारै हाथां सिणगार करायो,
थनै कोड सूं सिणगारयो;
म्हैं थारो अंस वणगी,

थनै म्हारो अंस बणायो,
थारा दुख में दुख जांण्यो,
थारा सुख नै सुख मान्यो;
थारी रीस आदरी,
थारै मनावण रूसणा करचा;
घणी रीझी, घणी खीजी;
थारै जीवण री
थारै वधण री
कांमना करी।

थन रेकारो देती-देती
अबै 'नाथ' किया पुकारू?
नी कांन्ह ! नी
थारो-म्हारो ब्याव कोनी हो सकै !
ओ तो थारो थारा सू
नै म्हारो म्हारा सू ब्याव हो जासी।

विदा

आज थू मथरा जावै
भलां ई जा,
म्हैं कद रोकू।

थारै मंगळ पथ रो असगुन कद कोनी,
थारा दुपटा नै खेंच-खेंच फाड़ू कोनी,
निरबै जाण,
हाथां रै लूम-झूम थारो चरण दतारू कोनी
मनैगो भेजण रो उतावळ करू कोनी

आज थू मथरा जावै
छेकर कूज में पाल,

चंपे रा फूल लाई हूं,
सूंघतो जा
माखण मिसरी लाई हूं,
चाखतो जा
दही-रोटी रो सिरावण कर ले
थार मंगळ तिलक रचाऊं,
जमना रै नीर रो बेवड़ो उठायां
थारै साम्ही आऊं,
थूं सुगन मनायले
गुळ सूं सुगन मनाऊं,
कैवै तो सुगनचिड़ी बण जाऊं,
पग पग माथै सुगन बधाऊं
थारै गियां पछै ई
मुरली रै घूघरा बांध सूं
मुगट रै मोती टांक सूं,
माळा मे चिरमियां पोव सूं,
जठै-जठै थारै पग रा निसांण है
उठै-उठै हरसिंगार रा फूल धर सूं,
अेकली ई कुंजां मे बस्ती कर सूं
खुदो खुद बंतळ कर सूं,
म्हारी देह माथै
जठै-जठै थारै हाथां रा निसांण है
उठै-उठै केसर चन्नण लगाव सूं
थूं मथरा गियो
तो थारी प्रीत नै
गाढी सायण बणा राख सूं।

जुध

मन रा मीत कान्हा रे—
घर-घर सूं भाजी आई गोपियां

जमना रै कांठै रमल्यां रास,
नटवर नागर,
अेकर वजादै थारी बांसरी

मन रा मीत कांन्हा रे—
पिचरंग घाघरिया घेर घुमेर,
ओढण ताराळी बोरंग चूनड़ो
बांयां मे बाजूबंद री लूंम,
पगल्यां में बांध्या बिछिया बाजणा
आभा मे पूनम केरो चांद,
आकळ उडीकै थारी गोपिया

मन रा मीत कांन्हा रे—
मिमजरियां भरदे वांरी मांग,
हाथां रचादै मेहदी राचणी,
सुळझादै उळझ्या कंवळा केस
फूलां सजादै वेणी नागणी,
अंतस में भरदै गैरो हेत,
नैणां में भरदै सुरता सांवळी

मन रा मीत कांन्हा रे—
गोंयर सूं काळी घेन उछेर,
गोहै उडीकै साथी गवाळिया
मटकी भर माखण लीजै चोर,
मावड़ नै देस्यां मीठा ओळमा
पिणघट—पिणघट गागर दीजै फोड,
रस में भीजैला कोई गोरड़ी
लुक जास्यां कंवळां केरी आड़,
थारै मनावण करस्यां रूसणा
आवैली सावणियां री तीज
झूला घलादयां वेगो आवजै

मन रा मीत कांन्हा रे—
नवीं सुणी रे म्हैं आ वात,

फौजां तो चाली थारी जुध मे
कुरू रे खेत घुरै त्रंबाळ,
संख सुणीजै सेना सज्जणा
अंबर में उडती दीसै खेह,
वाहण तो चाल्या थारा पून-सा
हस्ती घुड़लां री चतरंग चाक,
धजा फरूकै थारै सेन री
बीजळ-सी खागा केरी धार,
बाका धनखां रा तीखा तीरड़ा
मैंगळ ज्यू झूमै रे जूभार,
धरती धूजै रे अंबर लडथड़ै

मन रा मीत कांन्हा रे—
कुण थारा दोयण कुण रे सैण,
राता लोयण क्यू बांकी भूहड़ी !
धारण क्यू करिया रे कडियाळ,
छोड्या पीतांवर क्यू रे सोहणा !
सीस बचावण क्यू सिरत्राण,
मोड़ क्यू उतारचा मोर पाख रा !
मुरली रै बदळै कर कोदंड,
चिरमी री माळा आगी क्यू धरी !

मन रा मीत कांन्हा रे—
जग मे जे मंडग्यो घमसांण, तो
भाई पर भाई करसी वार
आपस में लड़सी मरसी, मानखो
चुडला फोड़ैला काळा ओढ़,
अमर सुहागण थारी गोपियां
कामणियां विकसी बीच बजार,
कुण तो उगड़ी वैनां नै ढांकसी
पिरथी पुरखा सूं होसी हीण,
टाबर कहासी बिना बाप रा
कुण करसी धीवड़ियां रो ब्याव,
कुण तो कड़ूवो वांरो पाळसी !

अणगिण मावड़ियां देसी हाय,
मुड़जा, फौजां नैं पाछी मोड़लै

मन रा मीत कांन्हा रे—
जग में जे मंडग्यो घमसांण, तो
कुण तो बणासी सतखंड म्हैल,
कुण तो चिणासी मैंडी-माळिया !
कुण तो उगेरै मीठा गीत,
कुण तो वांचैला पोथी पांनड़ा !
कुण करसी गोखड़ियां में जोत,
कुण तो मांडैला आंगण मांडणा !
कुण तो मनावै वार-तिवार,
कुण तो तुळछां गवरां नैं पूजसी !
अणपूज्या सारयूं सिझ्या देव,
कुण तो करसी रे मिंदर आरती !
मिटता जीवण री थनैं आंण,
मुड़जा, फौजां नैं पाछी मोड़लै

मन रा मीत कांन्हा रे—
जग में जे मंडग्यो घमसांण, तो
कोयल कुरळासी बागां मांय,
नाचता थमसी बन में मोरिया
चीलां मंडरासी हरियै खेत,
गीधण भंवैला सगळै देस पर
डाकणियां रमसी रातयूं रास,
चौसठ जोगणियां खप्पर पूरसी
धरती माता रो लागै स्राप,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै

मन रा मीत कांन्हा रे—
जग में जे मंडग्यो घमसांण, तो
भातो ले भंवसी रे भतवार,
हाळी जद लड़वा जासी खेत में
हळ री हळवांणी वणसी सेल,

खूरपी सूरां री जड़ियां वाढसी
मुड़दां री लोथां रो निनांण,
लोई री पांणत होसी रेत में
कांमेतण देसी थनै गाळ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै

मन रा मीत कांन्हा रे—
जग में जे मंडग्यो घमसाण, तो
जमना में लोई रैसी नीर,
माटी रैजासी लाखा बोटिया
वस्ती मे घावा रिसता सूर,
लूला लंगडा बण थनै भाडसी
अणघड रंजासी सगळी भोम,
ऊजड विरंगी होसी कोटडिया
क्यू मेटै रखवाळा रो नाव,
मुडजा, फौजा नै पाछी मोडलै

मन रा मीत कांन्हा रे—
आजा रे दूधा धोल्यां हाथ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोडलै
गोरस-माखण सू रगल्या होठ,
मुडजा, फौजां नै पाछी मोड़लै
आजा गोरी नै भरलै बाथ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोडलै
आजा रे पिणघट करल्या बात,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोडलै
आजा रे ओजू रमल्यां रास,
मुड़जा, मुड़जा फौजां नै मोडलै

□

'कविता मिनख रो अनाद अर छैलो ग्यान है। जिण दिन सूं मिनख इण धरती माथै अवतरियो, उणी दिन सूं कविता उणरै माथै प्रगटी अर जठा लग इण धरती माथै मिनख रो सासो रैवैला, कविता उणरै माथै रैवैला। मिनख सूं उणरो मन अर उणरी भावना अळगी होय गई तो उण सूं कविता रो विजोग हो गयौ।'

दीवा कांपै क्यूं

1962

• [illegible] • [illegible] • [illegible]
• [illegible]

गीतां रो जस

थाळी तो वाजी ऊंचै डागळै
रैणादे जायो सोनल भांण रे
कोई मां टसकै ऊंडी ओवरी

आखे कड़ूवै हरख वधावणा
कुण तो गावै मावड री पीड़ रे
सिरजण रे सुख रा कुण दे गीतड़ा

अजमो रंधावै रतन रसोवडै
पोळ्या रे वांधै बांदरवाळ रे
मामूजी मात्या देवै वारणै

हांचळ तो मोळै नणदा लाडली
जेठाणी देवै पाटो ढाळ रे
पड़दा बंधावै गवाख मायवा

जोसीजी बांचै टेवो टीपणो
आई बेमाता मांडण लेख रे
मीठी गीतेरण काढ़ै धूपटा

मावड रै नैणां कविता जीवनी
आयोड़ा जुग जुगां रे जोग रे
कुण तो लिखसी जनमा रा गीतड़ा

बागां री आई मोठी वायनी
निरखा नै हरखै मन रे मीत रे
लेसर लिख लिया ओळूं वाटड़ी

बायेलो घोळी मीठी प्रीतड़ी
सासां में भेळी मन री गंध रे
बाबा में झूली जाणै बेलड़ी

सुख तो जणावै कुण मैं आसरा
कोई जे निरिया हूता गीत रे
मन री बाता नै गाय गुणावती

अळगी तो जिणगी रातयू मेडिया
मन माही पीव मिलण री हूग रे
कोई मानेतण बरिया हुगणा

चालो नै उड़ावो अणबोलणा
कोई मनावो चतर गुजाण रे
गीता विन कोनी मुळकै कामणी

गोरी सिणगारै गीत गहेलिया
मेंहदी रचावै मीठा गीत रे
गीता बिन कोनी मडै माडणा

गीता बिन जिया परणै धीवड़ी
गावै बनड़ा बनड़ी रा कोड रे
पीठी चढ़ावै कोई गीतड़ा

तोरण तो आयो राइवर मावड़ो
बनड़ो चुग चिड़कोल्या रै तुन रे
बामण पोढ़ै तो पोढ़ै गीतड़ा

फेरै ई फेरै घमगी माडनी
कुल मनावै जिनसा रा निजोर रे
चवरी रा बाबा गाथा गीतड़ा

मीठी बोंदणरी पामी सासरै
आयू रो गीता मावै मेळ रे
करूं विदाई गीता गीतड़ा

फूलां री सेजां शिवटी घूघटै
संकाळू डरती नूयै सुहाग रे
वनड़ा सू सेधी होवै बीनणी

धीरज बंधावो बाई सासरै
कोई तो गावो अमर सुहाग रे
गीतां बधावो बारी प्रीतड़ी

कुण तो छिपावै साधां अरगणी
छानै ओलै रो ज्यारै पेट रे
गीतां में गावै बंस वधावणो

कान्हूड़ो झूलै सोवन पालणै
मावड़ नयूं बैठै मुडो भींच रे
हिवड़ा सू छळकै भोळी लोरियां

प्रीत तो लगाई, बाई पीपळी
चाल्या कमाऊ जद परदेस रे
ऊंची चढ जोवै बिरहण बाटड़ी

नैणा रा आंसू पूछै गीतड़ा
गीतां सू घटसी काळी रैण रे
गीतां सू ओछा दिवस बिछोह रा

गीतां रा भेजो कोई बादळा
ढाढ़ी सुणावै घण रा गीत रे
गीतां री कुरजां हाथ सनेसड़ा

गीतां रै समचै चालै सासवां
भाई बैनां रा गाढ़ा हेत रे
गीतां में देवर नणदां लाडली

कुण तो ब्यायण नै देवै सींठणा
कियां जंवाई जीमै थाळ रे
गीतां बिन कुण तो सगपण सांचवै

बिसरण तो लागी बधी बुहारियां
गीतां गू रोपो कुळ री काण रे
गीतां बिन कुटुम कबीला तूटसी

सूनो बळै रे दीयो आगणं
गीतां बिन तूठै कोनी देव रे
गीता नै उडीकै मिंदर आरती

गीता मे तुळछा गवरा पूजणी
सीग्य बरता रा साचा नेम रे
नूवें गीता बिन टळिया जावसी

भगवां तो धारया साधू सातमा,
गीता बिन कोठै आतम ग्यान रे
नूवें धरमा रा नूवा गीतड़ा

मिट ज्यासी दुनियागां रा पानड़ा
थोरत कीरत रे जग री देह रे
गीता मे जुग-जुग ताई जीवसी

गीता बुलाई आई बादळी
आमूदी धरती री अळगोट रे
गीता बिन बियां होवै हळगोनियो

गीता रा काढो नेता ऊमरा
गाबो तेजा री तीणी ढाळ रे
गीता गू भर लेवो बोबोळियो

गीता बिन धूजै धूजै कोलियो
पाणिलो धूजै पोरा नीर रे
गीता बिन रोगी रात मगाळगी

नुबो सो मनड़ा पावै बादवा
गीता बिन कोनी होवै म्हान रे
गीता मू ऊगी बाई पूजड़ी

गीता बिन सीयाळा नै काटणो
गीतां बिन कैहड़ा कंथ वसंत रे
गीतां बिन कैहड़ो सावण भादवो

गीतड़ला गावै भोणो वायरो
गीता सू ऊगै सूरज-चांद रे
गीतां बिन रितुवा फिरणो छोडसी

गीतां बिन कोनी नदियां खळखळै
गीता बिन कोनी ऊगै फूल रे
गीता बिन कोनी दीवा जगमगै

गीतां बिना प्रीता तो रळियारगी
गीता बिना जाया पूत कपूत रे
गीता बिन परणी घाटा लाधसी

गीता मे जलमै जीवै मानरा
गीता मे जागै सबळ समाज रे
गीता मे आसा जुग नै जीवणो

पग-पग तो जीवण मागै गीतड़ा
आवो रे कवियां म्हारै साथ रे
जुग नै नूवै गीता सू पेरल्या ।

सोवन माटड़ी

[illegible] तो धरती नै बरस्या नीर पे बैगी
आ म्हारी मरुधरा बाग [illegible]
धोरा सू टाळै [illegible] माटड़ी

[illegible] समद नै मरुधरा
[illegible]
[illegible] म्हारी माटड़ी

[illegible]

पाछो तो बावड़ थारी झूपड़ी रे मछवा
थारी थाळी में चानण चौक
तड़फा तोड़ै रे सोवन माछळी

मारयू समदा नैं रासै नैणा मायनै रे मछवा
होठा बिच साचा मोती मात
मीठा पाणी री सोवन माछळी

कैवै तो चीर कवळो काळजो रे मछवा
माथै भुरकाऊ तीखो लूण
काटा बिना री सोवन माछळी

तेल में तळू रे थारै गाम रसोड़ै मछवा
नीचै गिळगाऊ मघरी आंच
छिण छिण सीझै रे सोवन माछळी

धोया-धोया थाळा पुरसू आधी रै अमला मछवा
अलप भरोसै जोवू बाट
अग तो मरोड़ै सोवन माछळी

मुद्दो अंटण रळती रा पाईं आवै रे मछवा
पैला ई थयू नी सैवै घाग
जतना सू राखी सोवन माछळी

थं दे तो वेचा सोवन माछळी रे मछवा
वेचनै बिणावा ऊंचा म्हैल
छोटा समदा में पाळी माछळी ।

जागण री गीत

मीच आंख्यां रो, मत अधारी
मत अधारी म्हारो

जागता रहो
ताकता रहो
जागता रहो
सपनां रो राजा चंदरमा, इमरत पी मर जासी
सोना री जागीरां खोकर सै तारा घर जासी
छिण में उठसी रैणादे रा काळा पड़दा
चन्नाणा री किरणां सूं ठगणी छियां डर जासी
नवी जोत में राख भरोसो
नवी कहाणियां कहो
जागता रहो

सीटी रो सरणाटो बाजै, मील मजूरी चालां
खेतां में पंछीड़ा बोलै, हळ रा ठाट संभाळां
हाट हटड़िया खोलां, दिन री थाळद आई
मैंणत भूखी रहै न कालै, इसो जमानो पाळां
ऊगे है सोना रो सूरज
मत आळस में बहो
जागता रहो।

जीवण रा दीया

मारग रा दीया रे
थोथी थळियां रा ऊजड़ पंथ
चादो तो छिपग्यो, किरत्यां ढळ रही
डरतो उगेरै तीखो गीत
चालै थकाळू डांडी अेकलो
गिम्या रा जाया ! थारो हेत
बाभो तो छोड्यो मगळी रात रो
भिलमिलतो दीसै रे उजास
जोत नै मिळावै पीळा भोर सू

मेड़ी रा दीया रे
कोई सचायो तेल चपेल
बाटां बटाई पीळै चीर री
सजिया रे सिझ्या रा सिणगार
गोखै सजोयो थारो चानणो
काळी रे काजळिया री रेग
थारै सरीसी गोरी देहड़ी
बळजै रे जद लग जोवै बाट
बधजै जद पीया आवै सेज में

मिंदर रा दीया रे
गूंगी पडी रे झाझ मजीरा
सूनो परकमा, सूनो आगणो
देवा री पूजा थारै हाथ
रातीजोगा री थारी बोलवा
भगता नै मिळियोडा वरदान
धूंई भर सीजै थारी गोळ में
कर सीजै आगोतर री बात
भाटा री भरोसो थारै कुण करै

माटी रा दीया रे
सूरज मूं ऊंचो थारो वग
सावण रै मोरै धूंई जूझियो
हेमा लो याथै थारी टाव
जोगण, बिजोगन, देवी देवता
माभन रै जीवण रा सैनाण
मोई धरती री सामा कुण गिणै
बळिया ईं आन्दा ईंसो प्राण
बुझिया लो जीवण जासो जीव गू।

'साहित्य जिकी सांच सूं बांधेड़ो करै, बो इतिहास ज्यूं, काळ सापेख कोनी होवै। इण कारण जद कोई काळ रो इतिहास, साहित्य में ऊतरै तो बो अणत-मोला रा पख में होवै, इण कै उण पात्र रा हक मे कोनी होवै। साहित्य घड़ी-घड़ी इतिहास नै आपरी कसौटी माथै जांचै-परखै। इतिहास नीं आपरो नजरियो बदळै–नीं कंयोड़ी बात सूं ज्यादा बता सकै जद कै साहित्य सारू अैड़ी कोई सीव नी होवै।'

बोल भारमली

1974

• [illegible]
• [illegible]
• [illegible]

पाळिया वामक म्है
मनड़ा रै रोहिणी द्रुमां
रचन-कचोळां ईमका पय पायो
डाढा डसायो कंवळो काळजो
विस री गहळ बितायो
रामतिया-रमतो बाळापण

गूंथती चंपा री चौथी पांगड़ी
पूगी वागा मडोवर रै
घरनी आफूनी रा फूल हिरणी ज्यूं
गोई मेहूड़ा री छाव
गुळस्यारा फाळ मांग्या
इमरत कर पीवी म्है
रविजळ री छळ-छोळा ।

यदळो चुकायो यूं
अणजाण्या मावीनां रै पाप रो,
धुनवारां, ओझाडां, मनास रो,
अणगमता हाचळ चूंघ्या दूध,
फाटै गावा री
गाठ घुली निरधनता.
हटक रै होटां दियै जोवन रो,
गोब-टोक रमता रूप रो,
बचपण रो,
मेहणा री बोली रो,
नागी निवळी रो
गोली रो

जोवन रै कामरूप डाकणा री रीझ
टूथो ओपणै टेरन्दा मान निहरां,
मार ज्यूं पाणा रा रावर नाम ।
पण देख पलां मांग्यो
हळवाला आमूडा
कोर-कोर, कागरै-कागरै

तनबन राज लियो जोबन साजूळो
सरवर री पाळ
मदगळी गजगामण सू करी चूक
कुंभ नै निरख गजमोती लिया काढ
मान लियो धणियाणी,
मांगी तो गज-गेज मोतां वर म्हैं मांगी

हिंगळू ढोलिया रै बादळ पथरणै
जठै-जठै म्है फेरिया पगवाड़ा
उठै-उठै विगसिया फूल
रातराणी, चंपा, गुलाब रा
अर सपनां रै ससदर-तकियै
जठै-जठै ओसरिया मोती नीरद-नैणां
उठै-उठै भरग्या
पीछोला, बाळसमंद, आनासागर !

तरणापै अंतेवर अंकमाळा
भीमळ-नयण मारग नीहाळती
प्रीत री पुरवाई रा संदेस री
कुरळाई रत्त-पंखी कुरफड़ ज्यू
'तिरसी हूं, तिरसी हू'
सेवट उडगी सरवर रै ईरा-तीरा
जोड़ी सूं जुड़ण
मनड़ा रै कोटड़ै

गोली वण भावन रची भाटिया री
राणी वण रंग दियो राठौड़ां
झोरावा गाया कोटड़िया रा
संपूरण नारी ज्यूं

म्हैं कुण हूं ?
जिणरै कूं-कूं पगल्यां री खोज
'खोज गई' गाळ खाय
ओठै-ओठै हालती कुळवहुवां
सतियां के राणियां !

प्रीत री कामधेण म्हैं तो
समाज रै मीट-मारग
(मुईदार ज्यू)
टणमण टोकरा बजावती
आगै निकळगी छांग रै
टळगी म्हैं टोळी गू

म्हनै टोळण आया 'आमाजी'
दूवा सोरठा गीतां कविता रै टिचकारै
पण म्हैं बधतीगी
मेतां-मेता, मरवरां-पोमरा,
बागां-बगीचा, चग्णोयां
थळां-मग्थळा

म्हैं कुण हूं ?
बापाजी रो जग-अपजस
हिवाळा ऊचो, ऊडो महगणो ?
कविता कोटड़िया री
अरथां, मवेंता, मवदा पग्वारी ?
पगोंरी प्रीत ?
नेह गाढा मारु रो ?
बिना हाथ हथळेवो ?
गांठ बिना गठजोड़ो ?
बिन माथा पगफेरो ?
जनमी घटै, पाळी कुण
बिगरी म्हैं घर माइलां
मरी हुई बिन माथै
आडो ज्यू समाज रो

म्हैं कुण हूं ?
मगीरा असगोरो ?
नाम जात कुळ बिहूणी
कौण दासी मात वरि रो ?

पड़ाळो ?
गड़ाळो
रूप री वणजारण
वडारण जोबन री ?
आदण ईंगरा री
रेग के हथाळी री
सीक सूं टळियोड़ी
उछाळो दवियोड़ी माटी रौं ?

ध्याय सुरसत नैं, सिमर गणपत जद
मांडोला छंदां-अछंदां
सबदां में बांधोला प्रीत री कथा कोई
बरणोला नारी नैं
थे ई बतावोला पीढियां नैं
'कुण हूं म्हैं,
भासा रा भावी कविसरां !

रूप

जद रतन तळाई रै
आडा टेढा पड़दा बंधाय,
झोलण जावती राजकंवरी
सहैल्यां रै झूलरै
म्हैं उतारती निवसण सगळा सूं पैला
अर पाणी रा दरपण में
निहाळती म्हारो रूप
मैला गाभा सूं मुगत
म्हैं अेक देही जात
जद ढोळती म्हारै अपधन रो
रूप कूंपळो निरमळ नीर
घुळ जावतो म्हारो कूं कूं पगथळियां जळ में,

ससहर ज्यूं पळकती
म्हारै मुखड़ा री पड़छाया
अर तिरती छोळां माथै
म्हारी मुळक हंस री पांख ज्यूं !

पण ओझाड़ा खाय
निकळणो पड़तो नाडी रै बारै
अर पूजतै डीला पैरणी पड़ती
कवरी री उतरघोड़ी पोमाकां !
उमगतै अगां काटती गडपां
कांचळी फाट्योडा टूकिया
बिना अतरगेवै कळियां रो घाघरो
अर बदरंग लूगडी !

अणसमझ म्हैं बूझती रोजीना
यूं म्हारै डील क्यूं आयो
हे कामणगारा रूप !
थारै ओपतो सिणगार कठा सूं लाऊं
च्यार दिनां रा पावणा !

सावो

अर सूं नारेळ झेलियां
मालदेवजी
गमखवरी रो सुभाव ही बदळतो लागै
आसपास ना भरै मेळा भेळी
ना करावै म्हनै मरदानो भेख
बळमणी रैवै आगो दिन !

सुवेस री की बात ?
गळीरां मैं मारिया री दीवरियां री
गत सूं ई बात !

पछै जोधाणै रो धणी
पग पसारै अजमेर तांई
चोखो बचायो जैसलमेर
गीध री अणियाळी मींट सूं
गढ सूं परणीजतो गढ़ !
राज सूं फेरा राज रा !

धसमस घोया जैसांणगढ़ रा
पीळा जाळी झरोखा,
सिणगारया कोट कांगरा !
ठाकरां उमरावा रो थट्ट परणावै
बुरजां, म्हैलां, माळियां !
घुरीजती नौबत अर सरणाई रै सुरां समचै
टाळी म्हनै दायजै देवण
डावडी ज्यूं
हाथी, घोड़ा, करहला, बळदां,
सोना-रूपा, हीरां-पन्नां,
गाभां—पोसाकां
रथ अर पालकी साथै

द्रूह दड़ादड़ ! द्रूह दड़ादड़ !
सुणीजै नगारां री धोंक
राठोड़ां री चढ़नी जान री
कळहळ रो सरणाटो गढ रा चौक में
ब्याव रै उमावै
राग रंग में रीझतो रजवाड़ो
बुरजां मे चमकावै सूरमा सैणां सू
जनानी ड्योढी गीतां रै वायरै
सिणगारै बाजोट विराजी बींनणी नै
मोत्यां सू परणावै आंगणै

केसरिया कसूमल रै दळ बादळ
सांधै भारमली अेक उणियारो
जिको उबारो उणनै अेक गान

समद म्हैल में
अर अेक ई निजर में
करती अनुरागण पौरुस री !

पसार लेवती अेक वार
उण अणजाण्या पौरुस रा कूकू चरण !
समरपण रा पुसब भर आचळ
उतार लेवती आरती देवता री
अर नैणा में सावळ झांक
धर देवती उण मन में
म्हारै हीया री हेमाणी
विदा होवण सू पैला !

सयाग

अजमेर आयां किता दिन होयग्या
अेक बार ई कोनी दिस्यो परणंत
दीन्यो ई होवै कुण जाणै
नाम नाम सुण्यो है बाना
अेक-दूजा नै ओळख्या कोनी !

तो ई सुण है परणीज्योड़ी बाजण में
कोई री होवण में

सीजै पौर आवग्यो डोड़ो अनदाता रो
पाना री छाब
पोसाकां, गैणा, अतरदान
केसर कस्तूरी
मिठाई रा छाबा

म्हैं गुद डोडी गूं खाई थोड़ी
अर राणी उमादे भटियाणी री
खवाग विड़दावती
माळ में घलाई पच्चीस मोहरां।

राणी जी नैं अंगोळी कराई
सौरभ री दपटां
दीवा जुपाया गोखै-गोखै
आळै-आळै चढाया पूजा रा पुसब
नख सिख सिणगारण लागी
चत्तर डावड़ियां !

हाल मोत्यां री लड़ाई कोनी
गूंथी ही चोटी रै
कै पधारग्या पिण्डा म्हैलां में !
धूजगी कंवरी रै हाथ री आरसी
हळफळायगी अवरी डावड़ियां
आंचै-आंचै सारण लागी काजळ
अर बिगाड़ण लागी
रळियामणो सिणगार !

म्है पुगी रंगम्हैलां
आधो घूंघटो खेंच
सेजां रा सिणगार अनदाता नैं
मुजरो अरज करती
घड़ी—अधघड़ी विलमायां राखण ।

म्हारै बिछिया रै घूघरां रै
खणका री अगवाणी
लड़थड़ता अनदाता
भरली म्हनैं भुजावां में।
अर म्हारै बोल्यां पैली ढंक दी
म्हारी अधरज आपरै होटां सूं

समझी कोनी
उतरतै मोळवै सईका रै चेत री चवदस
अेकाअेक बणता इतियास नै
डरगी
इण अचींत्या अणाहूत सू
आहेड़ी साम्हे हिरणी ज्यू ।

प्रथीनाथ,
जिकां री दुधारां लचकै
मूरां री मेटक ।
धूजै मारवाड़, नागौर, सोजत
अर अजमेर री गिरद,
भीतै बरजोरी
कादम्बरी री गहळ
दायजै आई अेक डावडी नै !
भारमली नट कोनी सकी
झूठ मत बोल भारमली !

जद गैला रो सावन,
सरणत,
पदवै रा आरण में पकड़ाय लिया
पचगायक कंदरप ज्यू म्हारै साम्ही
मोह मूरछा रै पाण
म्है ई बणगी छळगारी
समोवड़ करण नै !

पुरसा भाग्या म्हनै
म्हारा सम्बोधन, विसेसण
बदळगी बरता, बदळगी दिसावां !

मांग में थारै खिलतो सिंदूर !
बदळा री रात दूजी बार कोनी आई !
म्है रातो क्यूं कोनी हुय गयू ?

बस, म्हैं ई चाल लियो दुवारो
अर नटतो नटतो, माथो हिलावतो
पलकां नैं तिरछी तणाय
लूमगी नरनाह रैं
संपूरण अंगां, संपूरण संगां
अंगरळी रैं पैलै सवाद में !

कुण जांणैं कद आई उमादे
अर ठोकर सूं गुड़ायगी पीळजोतां !
लाल किवाड़ी रो सुड़को ई कोनी सुणीज्यो
दिन ऊगां फगत साध्या
धरती पड़ी म्हारी कांचळी रैं लाग्योड़ा
भटियाणी जी रैं काजळ टीकी रा
पूछ्योड़ा अहनाण !
कुड़ाळी बण आंगणैं ढळयोड़ा
म्हारा घाघरा माथैं
ठोकर रा सळ ।
भींता माथैं चिपियोड़ी गाळिया ।
मोड़ै ढळयोड़ा आंसू
अर चौवारैं बिखरयोड़ी
चूड़िया, बींटिया, रिमझोळा,
करणफूल, बोर अर बाजूबंद ।
म्हैं दूजैं दिन जागी ।

काटो

[illegible] एक दिन
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

'कविराजा, देखूं थांरी गुरसत रो परताप
मनाय लावो राणी नै
रूसणो भंगावो।'

पैलीवार चेती म्है
धारणा री मोह-धरती सू—
कोई सांमी है इण राजा रै मरद रूप मे।
इचरज होयो म्हनै
परण्योड़ी लुगाई रूठगी इण आदमी री ?
हथलेवा रो दाग ई दाग लाग्यो
इण बींद रै ?
बीनणी मीटीजी ई कोनी इणरा अगां सू ?
है... ?
परवासो कोनी होयो इण निरभाग्या रो ?

अर ओ मरद भेजै
अेक कवि नै, आपरी परण्योड़ी मनावण ?
दो प्रेमियां रै बिचाळै
हेत रो मून ई जद रचदै
सौ सौ त्रिकूटबंध,
अर अेक-अेक सबद रो उच्चारण
बण जावै सुपसड़ो, सावमळो, मदाक्रांता,
पछै हेत रै सिवाय किसी कविता
मांगै रूसणो अेक मांनेतण रो।
म्हारी जांण मे
प्रेमी ई होवा करै कवि काळीदास।

गुण्यो करंई कोई ढोलो
अेक तीजा पुरस नै भेजे
आपरी मरवण मनावण नै ?

कदू कोनो ओ पुरस
भाग आपरी प्रांणप्यारी रा रेसमिया धुनळ
धर दै अबोट चंदरमुख आभा मांग्ही

अर उणरा दरपण-नैणां में नैण घाल
कर दै नेह रो वो संकेत
जिकां सू दांमणी सी चमक जावै
नारी री रूंआळी रूंआळी
अर मुग्ध होयोड़ो वा
नट जावै, नटियां जावै, नटती ई जावै।

धरती रो भार धारण वाळी
अे भुजावां क्यूं कोनी बाध सकै
आपरी तिरिया री पुसब काया ?
कोई खांमी है इण राजा रै नरापण में।

अर आखा नारी लोक में
म्है भारमली ही लाधी भागहीण,
जिकी सोयगी इण अणवर साथै ?

जिका मरद नै नैड़ो कोनी आवण दियो
कोई लुगाई आपरा रूप मंडळ रै
उणनै जीत. अंजसै भारमल ?
इत्तो पत्तन म्हारो ?

समझतां ई परसेवो फूटग्यो म्हारै अंगां
अपूठी होय पूंछ लिया
म्है अड़वड़ता आंसू
भागी म्हैलां में दरपण रै रूबरू,
काळी छियां-सी पसरगी
नैणां रै हेठै।
अवरोही जोवन रै पिणघट
ढळग्या कुच-कळस
चामड़ी लटकती-सी लागी
भुजावां री

सुण्यो ईसरदासजी भंगाय दियो रूसणो
मांन छोड़ अठवाळी बिराजगी राणी
जोधपुर आवण नै।

म्हैं बघारथा नाळेर देवी रै ।
नाचण लागी अणूता मोदी में ।
गुमेज है म्हनै
अेक आंटीलो, लोही तिरसो,
नारी मन री साधां सू अणजाण मरद
म्हारै कारण रळी तो करी दूजी नारी री ।

पलकां सू बुहारथोड़ी सेज री
अनग-रज में लुटथोड़ी काया
अेक क्षणघड़ नर री
फुरण तो लागी नेह रै नगारां ।

म्है खाद ज्यूं तो रळी
अेक पुसव रै विगसाव में ।
अकारथ कोनी होई म्हारी गीत संगीत वारणी
अंग मरोड़णो काचळिया उतारणो ।

म्है जाणू, म्हैं कोनी लियो जलम
कोई राजा रै घरै ।
कोनी जलमी कोई राणी री कूख ।
पाछो म्हारी कूख जलम्यो
कोनी वणैला राजा ।
पण पछतावो कोनी म्हारा नाम जात
कुळ विहूणा जलम माथै
मत वणो भला ई राज कंवरा री मां
म्हैं अेक सम्पूरण नारी तो वणगी ।

फँ आया समाचार कोसाना मू
पाछी फिरगी राणी री पालकी ।
आसाजी बारहठ कैयो वताजै ...
मान अर पीव रै दो
अेकै कंवूठांण

घणी रीस आई वारहठजी माथ
थांणी फेर दियो थें म्हारी साधना रै
म्हनै उबारण री हूंस में ।
सांचाणी गैला होवै दोनूं—कवि अर प्रेमी ।

विराग

आरण सूं बावड़ता जोधारां रो
जद उतारूं आरती,
झटकूं पोसाकां चढी खेंख,
अर धोवूं चाठा लाग्योड़ा कड़ियाळ ।
यूं लागै जांणै म्हैं पूंछूं
न्हारां, बधेरां रीछां री
लप-लप करती जीभां ।

सूरां रै कपाळ प्रहार करता सुभट
कांई सांचांणी भूल जावै
म्हारो फूलां गूंथ्यो सीस,
आपरै खांधै टिकियोड़ो
सिझा रा सिंदूरी पळका में ?
भड़ां रै उरांट सैलां रा धमोड़ा मारता
कांई वै पांतर जावै
आपरै भुजअंतर भिड़ता
म्हारा पयोधरां नै ?

संघार कियोड़ा वीरां रै पेट सूं
जद निकळै अंत्रावळियां
कांई वांनै कोनी रळी आवै
म्हारी नाभी कनै ऊगी रोमलता री ?

खागां सूं न्हावणिया म्हारा राज,
कदेई तो कोनी करी मनसा

मान दियो थें अेक अणगी रूप नैं ।
छानें कोनी रागी आपरी प्रीत
अर छळ कोनी कियो भोग सूं ।
ओछो तुलग्यो वो म्हागे ताकड़ी
भोग रा संपूरण अरथां में ।
कोनी भोग सकियो नित नई जीत्योड़ी-धरती
कोनी रिझाय सकियो भारमली सिवाय
कोई अवर नारी ।
अधूरो वीर, अधूरो भूपत ।
आधो पुरस, आधो भंवरो ।।

दूजी कांनी म्हैं भारमली ।
जठीनैं मोड़ दियो आपरो अंग वाहण
जठीनैं संधाण कियो जोबन रो पुहप धनख,
जठीनैं वाही रूप री खागां
बाजतै ढोलां जीत लिया मनां रा गढ़
धराधार करदी जूझारां री अखोणियां ।
संपूरण भोग सूं ओछो
न लियो, न दियो ।

अर ओ अलबेलो राजकंवर ?
अेक कापुरस ।
रगत री झूठी सौरभ रै कळंक रा
मसाणिया हेला रो चाळो
कठै आयगी म्हैं ?

जांणै पाबासर रो हंस
मोती चुगण उतरग्यो ओछै नाडै
जांणै मरू में भटक्योड़ो किस्तूरी-मिरग
पूगग्यो करदम सरोवर ।
हाल वयांरा कोनी पूग्यो नीर
रळक्यो कोनी धोरां
लागै अडवाणो कियो है पांणतियो ।

फिरूं बाघाजी रै पड़वै
पण कोनी मिलै रीझ रो आऊकार !
जित्ती वार अेकायंत में
अेकला मिलण री चेस्टा करी म्हैं
म्हनैं लाधा वै जुगल रूप में
अर टळता गया
म्हारै मिलण रा मौहरत !

कद देऊं इण अरजण-पुरुस रा
सीस नै छाती रा भूधरां बीच बिसांई ?
आसा ससहर आनन माथै झेलूं
अधर पारळ रा दाझता घाव ?
अर अंकां में कसती-कसीजती
हो जाऊं इण लोक सूं अंतरधांण ?

बाघाजी रा आऊकार बिना
मरगी राम जाणै संसार री कित्ती भामणियां
निरखी, झुरती, अण बोली !
अंजगी मारमली री लुगाई बणी
म्हनै टाळी वै टोळी सूं !

म्हैं ई बनग रै मरोगै ठगीजी
रिता अगा सूं !
लोगां आख्यो मारमली मान्है
जोधपुर, अजमेर, जैसलमेर रै राजम्हैलां
अर म्हैं, महादेव रै थड़ावण जोगा
आरडोरिया सूं पूज्या गई
मनमानिया मरद, अधूरा प्रेमी
चोर अर छलिया !

बाघाजी मोपदी आपरी कल्पना
टूटती मदरां मगरा
अर अेक मटकतो अम्प मरट
भिड़ग्यो दूजा अम्प मरट सूं
अनूप मरट री आकार धारण करण नै !

आप

म्हारी बात करती करती म्हैं
क्यूं करण लागगी आपरी बात ?
मुर क्यूं बदळग्या म्हारी कथणी रा ?

आप सूं सनमन होयां
दीठ बदळगी है म्हारी !
मरू रै कण कण म्हनै नाचती दीसै निरजरियां
कांमलतावां लूमी है कलपद्रुमां रै;
रंग-झड़ लागी है, रजरमता अणगिणत फूलां में

मीठी लागै आपरी दियोड़ी पीड़
होठां माथै हरिया घाव दांतां रा
नखां छिदियोड़ा उरंग
अर केवड़ा रो चुभियोड़ो कांटो
अपधन रै रेसमिया पाट-पल्लै !

लावो आपरो सीस
म्हारी छाती माथै टिकाय
गीतां सूं थेपड़ दूं पलकां !
लावो होठां सूं होठ उळझाय
आपां फूंकदां प्राण, पिंजरां में !

हां, कसलो
कसलो आपरी बळी भुजावां में
म्हारो इकलेवड़ो वीजळ गात !
मालदेवजी रा भेज्या
आया आसाजी बारहठ म्हनै पाछी ले जावण
आपगी होवैला ओळूं राजा नै
अर आपरी कुवांण रै पांण
वहीर कर दिया होवैला कवीसर

नमो जोग जोगांण, करतळ गरळ धर
नमो मार मारण सुरसरी सीस, ईसर
नमो अेकलिंगी, भूतेस-काय:
नमो सिवाय: नमो सिवाय:

नमो मोहिनी रै भुवन रूप रींझळ
नमो भुजउंवायां सती देह निहचळ
नमो जळमअंतर उमा रा वरणवर
नमो उरधलिंगी, जटाधर सुधाकर

नमो परमगुर, अणत, विस्वनाथ:
नमो सिवाय: नमो सिवाय:

साख राजा मालदेव री

म्हैं मांगिया नित नया खितिज
नित नया भुरजाळ।
जठै जठै बजाई म्हैं हाक
रणमल्ला रा मूंडा सूं पाटदी मेदनी,
अर अजेय म्हारो कटक
सारया दस बरसां में जीत लिया बेतीस मुलक

रण रो रसियो म्हैं
म्हारै परक्रम, विरम जोवै
अपणै पराभव री बाट!
साधारण समझ नै पचरंगो
'ऐसा रै समर कोई दम हारै कांनी'
सरण सूं बांनी मरै अनत
ऐसा सूं रिपै कोनी!
बड़ा है सासण नै बंधणों!

सोघतो कोनी म्हैं, गमियां थनैं !
मरियां, कोनी करतो पछतावो
पण थू म्हारा पुरसारथ री उतार पाग
वर लियो अेक कवि नैं ।
तीखड़ी बोर जैड़ा कोटड़ा रा
धाड़ायत बाघा नैं ?

भारमली हरायदी म्हनैं
मेहणो लगाय दियो म्हारा पुरसारथ नैं
अं व्रणां री औखद कठै ?

अबै तो राणी ई कोनी चढ़ैला
म्हारी पौळ
धरती ढबैला कोनी म्हारा सूं
अर कळंक लागैला म्हारा जस रै
विगतां में !

गुण गरबा भारमली !
थूं भर देवती म्हारी अपूरणता रा आळा
म्हनैं वणावती अेक पूरण नारी रो
पूरण पुरूस !
म्हनैं वगसती थारै इमी कूंपळा री
अगोचर बूंदां !

म्हैं राजा सूं वण जावतो रंक
भसमी रमाय लेवता !

उणनै म्हारी सेज, म्हारा ई धणी सूं
रळी रमतां देख !
पण जांणती म्हैं,
भारमली सेवट सोवैला आपरो भरतार !

म्है लुगायां,
सूंप दै, जिकां रा माइत, अेक अणजांण पुरूस नै
बांध दै गंठजोड़ा
कांपती हथेळी धर दै नर रा हाथ में,
गाजां बाजां हजारां गीतां बीच
अगन री साखी, समाज रै सांम्है
सीख लेवां दोरी-सोरी पुरूस सूं करती प्रीत !
तरसां छोकै पड़ी भोग री हांडी नै !
चळू चळू पीवां
अर परसाद ज्यूं चढावां माथा रै !

भारमली पोल खोल दी मोटै मरदां री !
फेरा खायोड़ी परणेतां
पूजती परमेसर ज्यूं जिकां नै
पण कोनी दे सकती संपूरण देही रो भोग !

म्हैं ई करली अेक भूल !
लोकां चावी होयगी रूठी राणी रा रूप में,
ओळखीजै म्हारो म्हैल
रूठी राणी रा म्हैल रै नाव सूं
बदळ कोनी सकूं
जस–देह सूं निकळ नारी देह में !
महाभारत रा गांगेय ज्यूं
म्हनै ई जीवणो पड़ी
बिरमचारणी री जूण
अेक अविचारी निस्चै रो
दोस बखाण रै कारण !

बरस री अेक अेक रात
करियां गई कल्पना
भारमलो री रळियां री
म्हारा धणी साथै !
अर उणरा पिंड री मारफत
भोग्यां गई भोग मन ई मन !

म्हैं छांट राखी मरद रा परसेवा सू
अर भारमली भोग भोग छित्तराय मरदां नै
दोनू पूगा अेक ई सम माथै
अेक राग सू, अेक विराग सू,
'नारी बणावै सो नर'

अंताखरी

अंगां रो मेळो भरचां पैली आयगी
म्हैं भारमली इण भुवन में !
कूंकू पगल्या वसंत री अगवाणी
फूला री जाजम बिछावण
चंवर ढोळण मनसिजा री पालकी रै !

म्हारै सांम्ही पसरचो है
भावी रो काळ हीण अतरिच्छ !
तिरता दोसै म्हनैं प्रभजण में
अणगिणत नीळज अगनावां रा आकार
निरबंध, अणावरत
कांमासणा लीण,
ममता बिहूणा, अगरभा;
सांवळा रो गाळ, रागां रीझ्योड़ा !
पण कुण समझतो
नारी काया री कमेड़ी रो नखराळो मरम
मरदां रचियोड़ा जुग में !

कुण समझतो संकेत
गढ़-कोटां-रावळा रो
बीजळसार पीळा लारै जलमता उछाळा रो
कुण जाणतो
मिनखा जूण री वेदी रै ओळूं दोळूं
गोतर फेरा खावता भोग नै
म्हे देह धारण कोनी करती तो !

संसार रा सगळा धन सूं इदको मोल है
थांरी देही रो, लुगायां !
'थे दुवार हो सगळी देहां रो !
थांरी देही बिना कोनी आवै
कोई आतमा, ईं रळियामणा संसार में !

थे धारण करो गरभ में बेटा
अर यूं ई बिना भेदभाव
धारण करो गरभ में बेटियां !
थे गरभ पूरणी मां हो अलेखां मावड़ियां री
थे जलम देवो डीकरा नै
जिका जोड़ायत वणै जांमणिया रा ।'

थे दूजी कुदरत हो विधाता री
पैली कुदरत री खांमियां पूरी करणवाळी
थांरी देही में विलगै
छोटा अर मोटा-सगळा !

मां ज्यूं सुवाणो जिकां नै छाती माथै
ढांको आंचळ सूं होठां में हांचळ देवती
वै जवान होयां उणी भांत मांगै विसांई
वल्लभा री छाती माथै
आंचळ री छीयां !
न्यारा-न्यारा रूपां में जीवो ।

□

'नर अर नारी रा सबध, आदूकाळ सू दो आधारा माथै जुड़्या करता। कुदरती अर सामाजिक। नर-नारी रा संबंध अबै ई सीमावां में सावळ बंधग्या होवैं वा बात ई कोनी। वेद अर पुराणां री सैकड़ी कथावां इणरा सैकड़ो रूप बखाणै तो आज दिन ई इण रा अलेखां रूप देखण में आवै।

गांगेय

1985

- तलाक री तात • बाप रा ब्याव में बेटो बिनायक
- प्रीत री पराछीत • फूलां मरां तोरां मरां कोनी
- मां थारी गोद निवाई अे

तलाक री तांत

सात पूतां नै समरपित धार में कर
आठवा नै जद उठा चाली
तरगाळी, अपाटां, हंसहाळी;
रोक कोनी सक्यो राजा मन कुतूहळ
बूझ बैठ्यो—
ऊजळै चरितां अख्याती ! देव बाळा !
कठै म्हारै रगत री आ वेल,
ओ अवतंस थू ओढाळ,
कर निरवंस थारा परम हेताळू,
मनेही सांतनू नै
क्यूं कठै काई करै है
पापनासी, अमर, अविनासी,
तरण-तारण, तरुण गंगे !
प्रिया हे
देव गंगे, वल्लभा हे !

रीझ म्हारी नै दियो थू वेग, आऊकार,
म्हारी सेज चढगी
म्हनै थारै अचपळै अंगां डुबायो
घेर म्हारी वासना सैंपूर देही
पारदरसी नेह थारै !
हास चितवण उरमिया थारै नयण री
पीवतो ई आ रैयो हू
अर ज्यूं-ज्यूं डूब डूबूं स्याम रगां
ऊबटो मन ऊबटो वण, घाट औघट आ रयो हूं !

थू म्हनै ओ भेद भोगां रो बतायो—
काम री झाळां दझयोड़ा मरद नै

जे कांमणी गंगा सरीखी मिल सकै निस्पाप
तो तन, प्रांण, मन होवै अमर
वैता नीर ज्यूं नित निरमळा रे निरमळा!

हे पवीतां मे परम पावन !
अमीणी पीढिया रो थू कठै करदै विसरजण ?
म्है करूं हूं जीव वरधापो,
नमन थारो करूं, कर जोड़,
म्हारा रगत रज सिरज्या महोबी बाळका नै बगस,
म्हारा प्रांण लेलै
अेक सैनांणी फगत आधा-अधूरा इण पुरूस री
बाळ म्हारो, पूत म्हारो छोड़ दै
अे माफ कर दै, म्हनें दे दै!
म्हैं थनै दीव चढाऊं
फूल चरणा में धरू, पूजू, करू हू याचना!

घणो राजा गिड़गिड़ायो नेह भीमळ
घणी करली अरचना आसू भर्‌या द्रिग
लोटग्यो धरती, विसारी काण-मरजादा पुरुस री
इमी-घट-मुख सूं कैयो गगा छळकती—
भूलग्यो भूपत ! दियोड़ा नेह वाचा ?
विगत रो संधाण करणो अेक दूजा रो मना है
जद खिचै दो पिण्ड, ग्रह, नखतां-नखत
आकरसण नियम सू
नांम ताई जांणणो विरथा
परिचै न सामाजिक *लगावां* रो *अरथ* राखै
मिनख रै भोग मे
देस जात समाज धरमा रा अदीठ वधणा सू
घणी ऊची ऊरजा होवै
काम रा कांमण अनळ रो।

म्हैं करूं कांई छिटक सेजां,
फिसळ भुजपास सू;
क्रोड़ सूं कर सीस आगो,

नेह भरिया अंगदाता सूं विमुख हो
काम म्है काईं करूं ?
अे सवालां रा पडूतर
गुण होंगें थू मूक बूझणहार, जाणणहार !
म्है थनैं बरज्यो, निमा थाना,
मिलण रै, नेह रै पैले दिनां !
अब असमव है जुड़ावो गाय थारैं
म्है बदळ मारग, सळक जाऊ विपिन-कांनन !
छुद्र धरती जोग है थू
छुद्र है धणियाप थारो नारिया माथै,
सकळ जळ, काळ माथै
अर भविस्यत रा अगम विकराळ माथै

त्यागती राजा थनैं
म्हैं पूत राखूला निसाणी रूप में म्हारै कनै
पाळूला मिनख री बीज !
फाटी देह देतां जलम, झेली पीड
म्हारा अंस नै म्है ई उछेरूला !

तरुण वधतो गयो ज्यूं फूटी रूंआळी
मूछ, डाढ़ी, गाल, होठां अर छाती
अग में चढगी परत स्रम सीकरां री
लूणिया ही आब, लाली नैण डोरां
गठीलै आकार भुज, मजबूत पुणचा
सीस माथैं केस लट बांकी
घणी बांकी नरां री चाल अचपळ !

सातनूं भंवतो नदी रै तीर हद बेचैन
जाणैं सोधतो खोई जवांनी
नित रळकता नीर में !
सरम खिंधियोड़ो,
घणो ई छीजतो,
निरमद होया गजराज ज्यूं !

हालता अणचेत सपनां में चरण ज्यू
वो विजोगी दरद गंगा रो उठायां ।

देख सर सधाण करता देव जोध जवान नैं
अर करतां परस गंगा रै अनंगा
होठ, छाती, गाल, केसां, पेट, कड़िया
पिंडळियां, चरणां, नक्खां रो
समभयो ओ वीर म्हारैं वस रो है
कुण करैं दूजो परस
इण हेत सू म्हारी प्रिया रो !

कैयो गगा नै विनत लोचण
तज्योडो, हारियोडो सांतनू जा रूबरू
माफ कर देवी ढिठाई,
माफ कर भूलां
म्हनैं थारी दया रो दे भरोसो
हेत रो जाचक
थनैं लेवण होयो हाजर
खमा कर
चाल म्हारै साथ थारै सासरै !

की नहीं तो अेवजी में सूप म्हारो पूत
म्हारी संपदा रो असल भोगणहार,
म्हारै बंस रो अवतंस
जुग नियमां प्रमांणै !
घणो निबळो बापड़ो है मरद
रुच रुच करै रजण
भोगैं भोग
अर सभोग कर, जद फेर पसवाड़ो
विसर दुनिया, अजाण्यो ऊंघ जावै,
मां गरभ में बीज पाळैं तीन सौ दिन
सींच लोही सूं घड़ै आकार
खुद रो मास देवै
पीड़ भोगै

पण करै परिणांम रो घणियाप सगळा मरद
पळै भरम, बेटा सूं बधैला वंस
झगड़ो अंस रो अर वंस रो है !
क्यूंकै मरदां रै रच्योड़ो अेक निबळ समाज
धन, परिवार, सत्ता राज री
है छळ इसो ई !

मां दियो है छोड़ इणरा बाप नै पण
जनम तो गंगा दियो, गंगा चुंघायो
पाळियो गंगा जतन सूं
याद राखो
पूत गंगा रो सदा गांगेय रै ई नांम सूं
रथ धज ऊंचायां,
ओळखीजैला पुजीजैला जगत में

बाप रा ब्याव में बेटो विनायक

भेद री आ बात म्हैं थांनै बताऊं—
अेक सौरम चांद में मझरात आवै,
अर उण सूं घणी तीखी
अेक सौरम सात किरणां में लियां सूरज तपै !
बीजळी तो पूंजळी होवै सौरम री !
अेक सौरम होवै जवांनी में चढ्या चंदण वनां री
फूल री छिण च्यार सौरम
घणी न्यारी होवै नदी, जळपांत री
सौरम समद सूं !

बस इसी गत
जिकी सौरम होवै कंवारी देह री
बोळमै, परसै मंध्योड़ा प्रांण
[illegible]

सांतनू चकरायग्यो इण गंध रा आवेग सूं
चेतना धिरगी असूधी अेक सौरभ रै समद !
बिना होड़ै, बिना आगळ,
वो खिचोड्यो ई खिचोड्यो
मझ्झ पीदै पूगियां दरसण किया जद
अेक सोनल देह रा गगा किनारै
ज्यू रमण मुक्ताहळा–
जळपरी कोई बिछड़गी होवै झूलरा सू !

कुण खडी परतख धरा रै केन्द्र में
थू मानवी है, दानवी लीला
के कोई देव कन्या
भूतणी है सखणी है ?
सांच है कै फगत सपनो ?
भूतणी ना संखणी ना देवकन्या,
दानवी लीला न म्है सपनो अधूरी कामना रो
धीवडी म्है झूपड़ी रा नाथ धीवर री
नाम म्हारो सतवती है
संख सीपी और सफरा रो सरळ संसार म्हारो !
नैण में प्रस्ताव ले पूगो धणी उण झूंपड़ा मे,
काढ़ ओळख,
हाथ मांग्यो सतवती रो
कांम रो आंधी चढ़योड़ो !

कीर बोल्यो—
बापजी बेटी अब्याही
घरां तो राजेसरां रै ई न सोभै !
भाग म्हारा,
खुद घणी इण राज रा, जे मांग करली सतवती री
ले पधारो !
पण सुणो म्हैं
अेक है युवराज पैलो भामणी सूं ।
आपरै सुरगां गया पाघां बंधेला सीस उणरै,

राज ई वो ई करैला,
अर जाया सतवती रा
जाळ नदियां में बिछा सफरा उडीकत
मारता भख
समद में सीयां मरैला !
राज रा जे धणी वांनै आप मानो
वंस रो दो गरव
अर स्वामी वणावो संपदा रो
तो अरथ है भोग रो इण बाळका सूं
न्याव होवै संतान री
परणेत रो होवै धरम पावन।
वात अखरी पण खरी ही
आय ऊभो फेर फेर सवाल वो ई
म्हैं लियायो देवव्रत गागेत नै
इण राज सारू, भोग संपद रो करण नै
वंस रो अधिकार दे
म्हैं खोस लायो अस मा रो दिखा पौरुस
मूंप चुकियो वेल, रीत परंपरा री ।

आज नट कोनी सकूं हक पूत रो म्हैं
हर नूवी परणी जलम देवै सपूतां नै
अगर मांगै धरा, धन, राज रो धणियाप आखो
जलम रै इतियास रो मुख मोड़ दै कुण
पूत जेठो तो सदा जेठो रैवैला

नयण नीचा कर, झुका माथो
पतरा पग म्हैल राजा वावड़यो।
अन खावै ई नी, भावै नी ।
आंख लागी हाय कैड़ी—
रात भर आ आंख लागै ई नी
मन ओपरो, तन छींज कांटा सो होयो
युवराज दूजी दसा,
यो कारण बतायो—

अर खुद पूछ्यां विना ई वाप नै
सतवती रै झूपड़ै जा चरण परस्या

प्रगट वोल्यो—
मा, मनां संकोच छोडो
पूत थारा ई करैला राज, म्हैं दू वचन सांचा
वयू कै म्हैं जामण बिहूणो हूं अधूरो
संपदा रो खेल खेलै वाप
पण मायड़ विना
आ आहुती कोनी म्हनें लागै
अरे ओ ग्रास ई म्हारो नी है
फेर ई धीजो नी होवै
सोचता होवो पूत म्हारा राड़ करसी
तो उठा ओ भुज करूं म्है आ प्रतिग्या
सुणो देवी देवता इण वस रा
धरती, अगन, जळ, चांद, सूरज
म्है जलम भर
हां जलम भर, वस कंवारो ई रहूला

मुगध माई मा निहाळयो वाळका नै
थू सभाग्यो है घणो गांगेय
थारै दोय मांवां !
दोय नैणा वीच में थू तिलक जैडो
थूं अजेय
अछेह होवैला जीव थारो
थूं जिको छोड्यो सकळ अधिकार कुळ रो
अेकलो थू ई वधावै वंस
कुळ रिच्छा करैला !

देवता फूलां वधायो
सातनू सरमावतो मो पूत सू टीको वढायो
पण अणूतो अेक वणाव वणतो रुक न पायो—

आ प्रतिग्या घणी भीसम
त्याग रो उन्माद है ओ
भीस्म पड़ग्यो नांम इणरै कारणै
पण केस होयग्या सेत्त अणछक सीस रा
धुवां ज्यूं उडगी जवानी
होयग्या गांगेय बूढा
बाप करता घणा बूढा
अर बूढा ई रैया जीया जठा लग !

प्रीत रो पराछीत

सतवती रै सांतनू सूं दोय जाया पूत
पण बधियां बिना ई अेक--
चितरांगद
कठै ई काम आयो राड़ में
गंधरव अरि सूं
दूसरो हो विचित वीरज—
ब्याव री चिंता हुई डीलां लियां, जिणरी
बडा भाई बहादुर, राजकरता, गंगसुत नै

सुणियो कठै ई राज कासीराज
रचियो है स्वयंवर
अपछरा सी आपरी तीनूं कंवारी धीवड़्यां रो
नाम अंबा, अंबिका, अंबालिका हा

पूगग्या गांगेय ई उण रूप-रण में
सांतनूं रा भंवर सारू
बीनणी नै जीत उण सजिया स्वयंवर में
दिखावण कळा सर-संधाण री

घेर तीनूं राज कन्यावां
उठा, रथ घाल, चाल्या हस्तिनापुर
जीत रण गांगेय, पौरूस री अथक जैकार सुणता !

अेक राजा, नाम हो सौवाळगढ़ रो साल्व
फिर्‌यो आडो,
अरज की—
म्है करूं हूं प्रीत इण अंबा कुमारी सू
म्हनै आ सूप दो बावा
भलां ई पूछलो
आ ई करै है प्रीत म्हासू
जे स्वयंवर होवतो निरविघन
आ करती वरण म्हारो
म्हारा हेत रो तो मांन राखो

रीस में अंगार ज्यूं बळता
विजय मद गहळ में गागेय
करदी अणसुणी आ अरज
उणनैं कूट, मरदन मान रो कर
लेय आया हस्तिनापुर रायकवरी

ब्याव रा फेरा फिरण लागा
करी पाछी अरज अंबा
करूं म्हैं प्रीत म्हारा साल्व सू पूरै मनां-ग्यांना
म्हनैं परणाय दूजा नै
करो हो पाप; कै है पुन्न ओ नियमां प्रमाणै ?

थे पुजीजो हो जगत में नेम रा निरमाण करता
थे घडो परिवार, वंस, समाज,
रचना थे कबीलां री करो
नारी नै वरत मरजी मुताबिक
थे बतावो—
प्रीत माथै वस किणो रो ?
प्रीत करणो अेक मन रो हक नी क्यूं ?
पाप क्यूं है प्रीत करणो ?
म्हैं करूं हूं प्रीत विमवा वीस
जिणरो सग सोधू,
परम फूलू

दरसणां रीझूं,
मुगध मन बीजळी जैड़ो सैचांनण
होवै सदा ओळूं, उडीकां !
थे म्हनै उण सू छुडा
क्यूं बांध दो हो अेक अणजाण्या मरद सूं ?

खातरी कीकर होवै थांनै
कै म्है मेजां रमूंला खुलै प्रांणां
हर करूंला अंगदानां में नी म्हारै प्रण री ?
याद कोनी करूंला म्हैं अवस म्हारा मीत प्रेमी री ?

बात जंचगी की मगज में देवव्रत रै
गोल कांमण डोरड़ा, गठ जोडणी
अर वरी, मोळी
भेज दी वा माल्व राजा रै कनै
अंबा कंवारी झूरती नै
ढोल बाजा, मान आदर सूं, गजा रथ-पालकी

साल्व नटग्यो–
मानजो म्हारो गवा, म्हैं होयो हस्तीरज
जिणी रै कारणै, उणनै वह ?
हाथ पकड्यो हरण कराय्यो,
अेक वो ई वर, कंवारी रो होवै
माफ कर अबा म्हनै तो माफ कर !

बावरी पूठी नूं वै बीमार मूं आहत
[illegible]
पण [illegible] न थामी
[illegible] मन [illegible]
[illegible] !

[illegible]
[illegible]
[illegible]

फेर वो नटग्यो
हरणकरता खण लियोडो विरमचारी रो !
घणी आहत, घणी ही अेकली अंबा
घणा अपमान री दाभी !
रूळघोडी अेक पाळा सू
खिलाड़ी रै पगां ठुकरीजियोडी दूसरे पाळै
कोई फूलां दड़ी ज्यू !

रीस अवा री नियोजित ही फगत गागेय माथै
फूक सू ज्यू नाळ मे दे झाळ
सोनार गळावै लाल गेरू चुपडियोड़ा स्वरण नै !

निकळगी अंबा मुलक में
राजवंसा नै घणी उकसावती
अन्याव री देती दुहाई
रीस में खुद होम री ज्यू झाळ परझळती !
करै कुण जुध पण गागेय जेड़ा अनड़ सुभटा सूं
गमावै राज कुण
इण अेक छोरी रा पखा मे ऊभ
खुद री कुण गमावै लाज
डरतो भीस्म सू
आखो भुजावळ जीवतो समुदाय औघड़ !

अेक दिन चढगी हिंवाळा तप करण नै
रीस रै फण री विखम फुणकार
रा विस सू डस्योड़ी
वैर सू निवळी
कठण तप री हुतासण मे पिघळती !
साधना सू रीझग्या सकर महेसर
कह्यो-कन्या !
थू अवस पूरो करैला वैर
पण इण जलम मे नो
जलम तो दूजो थनै लेणो पड़ैला !

सुण विधाता रै लिख्योड़ा लेख
वा क्यूं देर करती
बैठगी काठा, मनोबळ सूं जगा अगनी
उणी छिण भसम होयगी
प्रीत रो इण भांत वा करती पराछीत
उण पुराणा फिनिख पाखी ज्यूं
जलम लेवण दुवारा, राख वणगी।

फूलां मरां तीरां मरां कोनी

तो सुणो अरजण, जुधिस्ठर
क्रिस्ण अर सगळा समरथां !
जीवतां म्हारैं, जठा लग म्हैं न हारूं
जीत कोई जुध ई कोनी सकियो
कोनी सकैला !
म्हैं अगर हथियार धर दू कालै रण में
थे करो आहत भलांई मार न्हाखो
जुध थारैं पख मुड़ै
थे विजय रा भागी वणोला !

सस्त्र म्हैं कोनी उठाऊं·
सांमनैं जे जुध में आवै सिखंडी
वो सिखंडी पुरस कोनी
अेक नारी है अभागी
इण जलम री, गत जलम री
अर पूरब जलम री, फगत नारी!

हैन है म्हारो हिया में नारियां सूं
म्हैं न आचरमण नियम सूं छिटकियोड़ो
परम कन्ता निद कंवळा
रोम म्हारो अवसरावै
नाड़िया नगनी म्हैन परवग वणावै !

म्हैं अधूरो मां विना
तो हूं अपूरण अरध-जोड़ायत विना
बेटी विना, बैनां विना
अर प्रीत करतो प्रेमिका रै मन विना
म्हे टूटियोड़ो हू
किणी खडत होयोड़ी देव प्रतिमा ज्यू
अपूज्या देवरा में !

हेत हो म्हारो सिखंडी सू जलम रा आंतरां मे
आ, म्हनै छिटकाय
दूजा री बणी सहभागिणी
जद अेक गण रा लोग म्हानै घेर
लेग्या अगन, गायां
अर धारण गरभ करणारी लुगाया !

म्हैं हरण पाछो कियो
जद आ बणी अंबा
जलम ले राज कासीराज कन्या !
यू बदळो चुकायो
हाथ पकड़यो म्है हरण करतां
निभातो हाथ रो म्है हेत
पण करली प्रतिग्या घणी पैला
म्है कंवारो जलम भर जीवण जिवण री !

आ घणी है मानवाळी, परम मानेतण,
मरद सू रंसियोड़ी,
घैर दारुण तप कियो
अर जद मिल्यो वरदान
दूजा जलम मे सहार करणो बैरिया रो
आ चिता चढ भसम बणगी !

मां थारी गोद निवाई अे

मा । गरभ थारै कुडाळी मार सोवै
ज्यूं निवाया पथरणा में !
गोद थारी होवै निवाई
जठै अचपळ हाथ पग हालै मुळकता !
देख, मरती वगत कैड़ी वापरै ठारी,
मरण री तळखणा पूग्यो मिनख
चित पड़ै, सीधो !
आख मे सून्याड़ असमांनी
निजर असमांन ई असमान उणनै लील जावै !
जलम सू इधको अवस होवै
मरण में हर जीव
वो मारग न जांणै, भूल जावै !

भीस्म ई चित आयग्या है अणगिणत तीरां !
छिदयोड़ी देह में
ताजा हरचा घावां खिलै है
पीड़ रा रज पुसब, धारण कर नूवा आकार
मारै ठोकरा !
आज गुणसठ दिन हाया रणखेत पड़ियां
आंखियां मिचगी
पलक भारी होई मण-मण
भवां नीचै लटकगी !
बोलणो ई बंद होयग्यो !
चेतना फिर फिर घिरै
पण घणकरो ससार अंधारो लखावै !
छीजता तन में सळायां ज्यूं पुराणा हाडका
अब निजर आवै !
सांस री गत घणी आंची
देह में मावै नीं, बस घूम आवै !

भीस्म खोली आंख
अर सचेत सूं बूझ्यो—कठै हूं !
लोग थारै दरसणां आया कह्यो ऊंचै सुरां
वै आयग्या सूरज मकर में
उत्तरायण
हे महाभागी हुकम दो !

भीस्म काढी जीभ
धीरै-सी सबद 'पाणी' उचारयो
फेर अरजण कर पराक्रम तीर धरती में पिरोयो
नीर गंगा रो परम निरमळ
उछळ आवेग सूं ऊंचो
अटूटी धार रा टोपा बण्यो
गांगेय रो मुंडो भिजोयो !

भीस्म नै लाग्यो
कै उणरी बच्छळा मा
घणै कोडा
सग-छाती सूं टपकतो
देव चरणामृत सरीखो दूध पायो !

मा ! जगत में हेत थारो पारदरसी
पीड थारी अकथ,
थारो हरख ई अणदेह
थारै गरभ में धारण करै सो देह गुणनी
थनै पी पी पळै
चिता टाबर री कर थणो सूं हार आवै
रोग अर भव-भय मिटावण
टोटका थारा परम विग्यान
थारै मान सूं काजळ लगावै !

टाबरां रो रुदन ई थारो रुदन
थूं पकड पूणचो प्रथम पग ऊभो करै
आगा सिखावै !

प्रीत सू संची जुगां सूं, पीढियां सूं
राळ देवै है भविस्यत रै अलख प्राणां
गुणा रा बीज देवै !
यूं सदा रखवाळती थाती
वणै अपरूप दुरगा, चंडिका अर भगवती,
बाळका विलसै,
पळै सै गोद में थारै निवाई !

यूं कियो सातेय सिमरण मात सत्ता रो
प्रभा वधगी
उजाळो देह सू निसरै
करै जैकार चचियोड़ो जगत बंधियो धरा सूं
जोत अविकारी प्रखर रवि ओप सू
छिण अेक में जा जोत मिलगी !
फूल बरस्या, संख बाज्या
ढोल रै ढळतै धमकै
प्राण रै प्रस्थान रो उच्छव मनायो !

जद चिता नै देह रो सिणगार सूंप्यो
अेक जणा रा प्राण रो कुरळाट फूट्यो
मोड़ मुंडो जद सिसकी आय पूगी
रोक सिसको,
हाथ मे ले मूठियो कोई मवागण तोड़ न्हाक्यो
अर मायो निवा
ले नारेळ हाथां
चालतो वो हुगगन बळती चिता में
गन करण नै, मौन होयग्यो !

कै अचाणक दीसियो बधतो दिगता
अेक मानव रूप
अणघड़, चाल गाथी,
मूंछ उठाया गीरतो अर गाद करतो
आ रैयो हो
गाथ आधी उमड़ती

अर गाव लारै गळ्ळ गळ कर भगवती गंगा
उठावण गोद में छावो
रळकती आ रैई है !
धधकती धू धू चिता रै मार छाटो
मद कर दी
इण कुटम रो जनक वेदव्यास हो वो !

अर गगा, मात गगा, मावड़ी गगा
पतित पावन, तमस हरणी
विमोचन पाप अर भव-ताप करणी,
आपरा जाया अमर गागेय नै
गादोळियै पुचकार,
थेपडती, करा पपोळती
टुरगी उठा सू, नीर गति सू
करण नै बेटो विसरजित महादध में ।

'तकनीकी सभ्यता रा जिका नतीजा
उणमे मिनख री चिंत्या मुख्य है।
जीवण रा दबावां रै कारण अर वेगवान
केई बेमारियां नै जलम देवै। लोग
कोनी कर सकै अर पसोपेस मे पड्या
इण तकनीकी समाज में व्यक्तित्व रो
ग होवै। छंवट मसीना रो असर इतो
र्वै कै मिनख री कोई कीमत कोनी
मिनख, समाज सू छिट्क्योडो अर
दो रैवै।'

आगत-अणागत

1986

● मौत ● जांमण नै....
कथरा री कांण

अगवाणी

आगा हो जावो वा'सा
अणसम मारग में क्यूं बैठा हो !
दीसै कोनी, सूरज रो आवै है रथ अठीनै !
चिगदीज जावोला;
कित्ता वेग सूं आवै है, देखो देखो,
इण रा आवेगा सूं आगती पाखती ऊठणवाळी
आंधी अर वयूळिया में उड़ग्या तो
थैं थांरी जांणो;
थोडी वळा फेर टिकणो–होवै
तो उण धुड़ता डूढा री भीतां लारै
छीया में बैठ जावो वा'सा,
सूरज रो वेगवान रथ अठीनै इज आवै है।

वो देखो इंगरेजी बोलतो थांरो पड़पोतो
रीस आवै जद हंसण लाग जावै;
थारै बैठा उडीकतां, उणनै सरम कोनी आवै,
जद ना कैवणो होवै, वो हां बोल जावै ।

अर वैड़ो तो बदळाव आयो–
कै टाबर टाबर कोनी रह्या;
टाबरा ज्यूं रमै है मोटयार;
गरीब गुरवा ज्यूं कारी लाग्योड़ा गाभा पैरै रईस,
परम गुरु घड़ी घड़ी परणीजै,
अर जणा जणा रा मन गोरती धोवड़िया गम्मीजै कोनी !

तो अंतानी-मिनख जावो मनवांना वा'सा,
थांरो कुण कोनी करै ?
कुण करां-छिपावै आपरा करम ?

छळ कपट रो ई है ओ महाभारत;
थांनै यूं ई कोनी दीसै बा'सा
मिनख रा बदळता मन री कालायां
थांनै कीकर सूझै !

बो आवै है सूरज रो सतरंगो रथ,
नया नया औजार अर हथियार
उठा लिया है मिनख !
नया नया नसा-पता,
नागा रैवण नै पैरियोड़ा नया नया गाभा !

बगत री तो मिटगी सगळी ओळखांण
रात होयग्या दिन,
अर दिन होयगी रातां;
थांनै उठाय अेक कांनी धरण नै
कोनी रुकेला मिनखां रा पवनवेगी यान !

हा बदळग्या'सै कीं बदळग्या
बगत, अकास, अरथ, धरम, प्रीत, काम,
ओ धमीड़ो थे कोनी सै सकोला बा'सा
आगा हो जावो;
सिरक जावो अेक कांनी,
उठी छीया मे जावो परा,
आवै है हित्यारा सूरज रो निपग्गो रथ !
आवै है !

ओळख

अेक जमानो हो,
जद लोगां नै लखावतो कै वै मिनख है
अबै की लखावै कोनी !

अबै फूटरा कोनी लागै फूटरा,
विडरूप भिरोखां सूं झांकण लागग्यो रूप-सरूप,
अबै तो पीड़ ई कोनी लखावै,
दोरो ई सोरो लागै

आगै लागतो, आपां जिनम कोनी हां;
कोनी हां जिनावर सींग-पूंछ वाळा,
आपां मिनख हां !

जमानो केई सबक सिखायग्यो
लुगायां नै लेवता वेचता—
अर किराया माथै उठावता लोग,
ना खुद लागै मिनख,
ना वै लुगायां लागै नारी—रतन !
गुलाम अर गरीब कमतरिया ई,
जुड़ाव सूं छिटक्योड़ा लागै जिनस जैड़ा,
अर रोजीना रो इकसार जीवण जीवता
नींद, जीमण अर भोग-भजन करता
आपां सगळा ई होयग्या हां जिनावर—
आदम जिनावर !

अबै ना आपणै कनै हरख-पीड़ है,
ना भासा,
आपां नै लखावै ई कोनी कै आपां हां !

उतारो

छिण अेक धरती नै थामो—
थामो म्हनैं उतरणो है

सूरज रा मात्यूं घुड़ला तो लारै रैयग्या,
हांफण लागगी पून अकासां लड़थड़ती,

वेग रूपायत होयग्यो;
अर गंध जमगी है बादळां ज्यूं
म्है जिको फूल सूंघतो
वो तो सौ जोजन लारै रैयग्यो !
हांफै है सगळा ग्रह नखत, मंगळ, बुध, गुरु,
म्हनैं अठै कांई करणो है !
छिण अेक थांमो धरती नैं, म्हनैं उतरणो है।

सूरज री अेक किरण नैं अठै आवतां
जित्ता किरोड़ वरस लागै,
सबद नैं उण अगन रा गोळा सूं चटक
म्हारै काना लग आवतां
लागै उण सूं बेसी बरस !
पछै थारी इण धरती नैं–
अेक पूरी परकमा करतां
वयू कोनी लागै वगत रो बाण !

देखो, म्हारै लिलाड पसीनो पळक रह्यो है,
देखो, फूलगी है सास म्हारी;
कांई म्हनैं वगत री चालणी सूं छणणो है !
छिण अेक थांमो धरती नैं, म्हनैं उतरणो है !

अेक पल तो सावण दो बिसाई,
सोवण दो म्हनैं मोड़ो दिन ऊगा तांई,

वांइटा काढण दो म्हारै पगा रा;
लारली-आगली सोई तो लेवण दो,
आम्है-सांम्है होवण दो म्हनैं म्हारै,
बस ओ ई जीवणो है कांई ?
ओ तो मरणो है !
छिण अेक थांमो धरती नैं म्हनैं उतरणो है।

मौत

बैठो हूं म्है बीसवां सईका रै उतराध
(फगत पनरै बरस बाकी है)
जलम लेवता अणगिण जीवां रै मज्झ
म्हनें ई अपरोखी लागै चितणा मौत री !

पण भिभक आकार धारण करै
म्हारै अवचेतन में रगत री अेक नाडी
जिणमें तिरता अलेखां मरण-कोडियाळ
उण इकथंभिया म्हैल रै कंगूरां कांनी
जिण माथै टंगियोड़ो अेक लोही भरतो नरमुंड
जिणरा होठा झिरोखां सूं छणतो
मळगळ हंसी;
अर गोमड़ा में लीरा री मेजां ओझकै
मेन्दां सूं विंधियोड़ा
पळकती करवाळां रै झटकै पड़िया कबंध
नूम माथै लटकता,
अरोगता केसर रा प्याला
अेंठता बदन मुगत होवण री पीड़ सूं !

कविता रो छांटो पड़ता ई
पाछो बैठग्यो रगत रो उफाण,
अर गरभ में बैठो होयोड़ो भ्रूण
रूप धारण करग्यो कूड़ाकार !

दमकतोड़ा उद्दीपन बन में
फूलां सूं लदापदम बेलड़ियां बीच
पाव मधुमा रै बाग
काम रा मरण बिंदु री चेतना में
अेकाकार
अंतस निरखण री भावना में
प्रणयराग माटी रा भुवन कूपां नै

हिरोसिमा अर नागासाकी रा नगर
धू धू बळै इण ताप सूं
अर दाझै लाखां पिंड चीसां मारता !
अेक धुंवा रा बादळ
अर धमाका समचै अलोप होवता
हज्जारां अबोध, निरदोस, जनपद
चेतनावां निस्पाप !

माथो पकड़ बैठग्या चित्रगुप्त जी
लाख लाख जीवां रो लेखो
पाप पुंन री खतावणी
मिजमांनी लाख लाख पांवणां री
पाछा सिरजण री चिंता !
नोबल प्राइज
अेनरजी बराबर मास गुणा वेलोसिटी वरग !

तणाव रा आसर धोमतो
दफ्तर सूं घरां बावड़तो
अेक अैलकार भिड़ग्यो समान लदिया ट्रक सूं !
निकळ आई पेट बारै
धोळी गुलाबी आंतड़ियां
अेक धमाका माथै बारै आयग्या
माथा रा चपामिया
बरसग्यो अेक हाड मांस रो बदन
पाणी, पांणी, पाणी !

सोना री अैटवाड़ी बणीसी थोथ
दान बरस नै
धोमतो ब्रह्माण्ड सनातन री कथा
परमहंसजी रै मगज !
धरतिया रै ऊपर घूमती
माछटां री बाम रो समाप
ऊंचे नेत रा बदात में पड़दाया देत !

डूबता, उतरावता, बदन
नागा, फूल्योड़ा, विद्रूप !

कठा सूं आवै रेळो अचाणचक
मरण रो,
बोळाय जावै अवेरियोड़ी संपद,
झूंपड़ा !
अर बिखेर जावै घरकोल्या !

वो उड़तो अेक विमाण पड़्यो संमदर में
तीन सौ पचास अमीर उमरावां
अर परियां जैड़ी फूटरी
परिचारिकावां नै आपरा गरभ में लियां।
हाल सोधै है लोग
उण विमाण रो कचरो
जातरियां रो सामान ?

जामण नैं....

छोरी सूं लुगाई बणती बगत रो बदळाव
घणी पीड़ उपजावै मां
अर थूं म्हारी कोई मदद कोनी करै ?

केई तो मिथक, केई तो रहस्य
जुड़योड़ा होवै इण बदळाव सू ?
सहेल्यां ई सांच कोनी बोलै
अेक बरजणा रो पसराव होवै म्हारै च्यारूंमेर
अेक गुब्बो, अेक अनुमान में जीवां
म्है सगळी धीवड़ियां ?

देही रा आपे आप होवता करम
जिकां माथै जोर कोनी म्हारो

क्यूं देवें म्हांनै अणूंती सरम,
क्यू करै म्हांरो दरपदमण, अपमान ?

क्यूं म्हांनै अपरस बणावै लोग
क्यू म्हांनै सूग आवै खुद माथै
क्यूं म्हांनै पाप रो बोध करावै
ओ देही रो धरम
क्यू ठैरावै म्हांनै कसूरवार
क्यू म्हांनै चुप रैवणो पड़ै ?

थू खुद भोगियोड़ी, म्हारी मदद कोनी करै मा ?

जांमण नै

थारा सू बिछड़ण रो भौ
म्हनै थारा सू जोड़ दो मा ?
भाई तो जलम सू ई आपरै पगा होवै
मोटा होयां लाग जावै आपरै बाप रा बोपार बिणज मे
संसार बसावै बड़ेरां ज्यू
अर सुख दुख झेलता गुजर जावै इण मेळा सू ?

पण घणी डरती म्है
सारै आंचळ री छाव छोडती,
घणी अचपळ होय जावती
जद थनै कोनी-देखती म्हारै कनै।

थनै म्हारा डील में उतारण नै ई तो
म्है रमती दूलिया सू
थेपड़ती, खवाड़ती, सिणगारती, लाड करती।
थारी जूण जीवण नै ई तो
म्है रसोई करती, घर बणावती, टाबर राखती !
म्हनै घणो डर लागतो थारा सू बिछड़ता !

सासरै गयां ई ओ सको कोनी छोड़ै म्हारो पल्लो
घिरियोड़ी नर रा भुजपास में
आंख मूंद इणी अभरोसा में चिमक चिमक जाऊं
कठै ई म्हनै बिछड़णो तो कोनी पड़ैला ।
कठै ई म्हैं विलग तो कोनी हो जाऊं ।

धीयां नै . . . .

हर वार म्है ई म्हैं हारूं बेटी, म्हैं ई म्है हारूं ।

थनै जाई जद सुणिया मोसा म्हैं
जांणै थारो बेटी होवणो म्हारो कसूर है ।

थनै बेटा साथै उछेरी
तो जणो जणो टोकी म्हनै
म्हारै पिड रा ई दो खंड,
गोचो तो कुण बत्तो कुण ओछो ।
तो ई धोवा धोवा ओळमा घालीज्या म्हारै पल्लै ।

थनै टोकी, बरजी समाज रै संकेतां
पण मेहणा सुण्या म्हैं ।
आंगण में थारी विगसती काया सूं डरती,
थूं बारै जावती तो अचक उडीकती म्हैं
अर छाती-पियंग माथै थारै पौढ़ियां
रान्यूं धमक धमक धोरा दिया म्हैं ।

स्यावणसार होई
तो भींगा आरपार करदी बाळटी म्हारै
नींद उड़गी म्हारी ।

परणै घर विदा कर

अबै म्हैं सुणूं थारै सासरा री सिकायतां
अर अवखायां थारै मन री।

थारै कारण हारी समाज सू
अर अबै हारणी थारा सू
हर बार, म्है ई म्हैं हारू बेटी, म्है ई म्है।

घर

धरती सू १४५४ हाथ ऊंचो ऊभो हूं म्है
सिकागो नगर मे सीयर टावर री
११० वीं मजल माथै,
जठै इतजाम है म्हारै रातवासा रो !
फगत बदळग्यो है अकास
अर म्हारी दीठ मे उपजंण लेवै
सात समदर पार म्हारो घर
मकराणा मोहल्ला, जोधपुर मे
खीर समद मे संपिणी ज्यू अळेटा खावतो !

[म्हा प्यारू भाया नै बेचणो है ओ दूढो,
सात लाख रिपिया कोई ओछी रकम कोनी होवै]

अेकाअेक धारण कर लेवै
मानवी उणियारो, म्हारो घर,
चूना सू पुतियोड़ो, परेवा जेड़ो ऊजळो !
बाथतो म्हनै आपरी हेताळू भुजावां मे
अर बंधतो म्हारी असीमा बादा मे,
डुसका भरतो,
टप टप चवता आसुवा में
पाछो लाध्यां गमियोड़ा टावर ज्यू !

भाईसा ! ओ कोरो घर ई कोना
ओ म्हारी रातादेई मां है—मां !
जिणरी कूंख में जलम लियो म्हे
अेक अंधारा ओरा री टसकती मचली में,
(सूंठ अर अजवांण री सौरम
हाल भर जावै म्हारी सांस में)
जठै चौक में चित पड़ियो
म्हें टुग टुग भाळयो असमांन !

नया घर में इण घर रो सामांन !
भूगोल सूं बंधियोड़ी कोनी आ सभ्यता
मोह, कोनी कोई चीज सूं
अेक बार वापरियां
अकूरड़ी माथै फेंक दै आपरी चीज बस्त

अै कोनी मानें सरग नरक
आतमा परमातमा
अणत्त काळ अर विपुला प्रिथमी।

कचरा री कांण

और फेंको अमीर उमरावां
पैक करण रा कागद

आज तो थांरो तिवार है
रंग-विरंगा, फूल-फांटा छपियोड़ा
चीकणा कागदां मूं बांध बांध
लावोला बलैसां भेंटां
अर दिनूगां क्रिसमस रा रूंख हेठै बैठ
मांता क्लॉज रा थैला मूं काढोला
अेक दूजा रा उपहार
पछै फाड़ फाड़ फेंकोला पारसलां रा कागद

पण जद ई मामूली सो दबाव आयो
आपां नटग्या आपणी जमीन देवण सूं
टाबरां नैं पालणें में पढ़ायो—
इला न देणी आपणी...
घर रा ढूंढा सारू कोट कचेड़ी चढ़िया
अर अेक टोडो कै चांतरो ई कोनी दी
भायां नै

पण अबै जलम ले चुकी है
अेक नूंवी सभ्यता
जिकी ई धरती नैं आपरी कोनी मांनै
कोनी मांनै देस आपरा
सैर, गांव, सगळा बदळता चालै
सींवां सूं आगै बधता चालै

आ सभ्यता बदळै मोटर हर दूजै बरस
हर तीजै बरस घर
अर आपरो गांव हर पांचवैं बरस

घर बदळती बगत कोनी ले जावैं।
आपरैं साथैं।

◻

आहुतियां

१९८६

कल्पना

जाग बनड़ी कल्पना
आगां घड़ां, की सांच रा, कीं झूठ रा चितरांम
सपना मिनख री पूरण अपूरण वासना रा
घड़ां पाछो अणमणो इतियास
उणनै गासिया देवां अरथ रा, कारणां रा
फेर उणरा काळजा सूं काढ लावां
मोतियां जैड़ा नतीजा
सूंपदयां रमता भविस्यत रै करां में !

अेक थारी कूख सूं सिरजण कियोड़ी
सांच होवै रचना, खरी होवै
खुद घटी घटना नीं सांची होवै सदा ई;

जाग बनड़ी कल्पना
थूं जुग जुगां सूं फगत जोड़ायत रही है
सांच री
थारै बिना जीवै अपूरण सांच
थू तो मधुर पख है सांच अणघड़ रो !

अरे मत लाज म्हारी कल्पना
थूं जाग बनड़ी जाग।

बाळापण

बरसां री भीड़ में
म्हारी आंगळी पकड़्यां पकड़्यां चालतां
बाळापण
थूं कठै छूटग्यो सारै !

कल्पना

जाग वनड़ी कल्पना
आपां घड़ां, की सांच रा, कीं झूठ रा चितरांम
सपना मिनख री पूरण अपूरण वासना रा
घड़ां पाछो अणमणो इनियाम
उणनै गागिया देवां अरथ रा, कारणां रा
फेर उणरा काळजा सूं काढ लावां
मोतियां जैड़ा नतीजा
सूपदसां रमता भविस्यत रै करां में !

अेक थारी कूख सूं सिरजण कियोड़ी
सांच होवै रचना, खरी होवै
खुद घटी घटना नीं सांची होवै सदा ई;

जाग वनड़ी कल्पना
यूं जुग जुगां सूं फगत जोड़ायत रही है
सांच री
थारै बिना जीवै अपूरण सांच
यूं तो मधुर पख है सांच अणघड़ रो !

अरे मत लाज म्हारी कल्पना
थूं जाग वनड़ी जाग।

बाळापण

वरसां री भीड़ में
म्हारी आं[illegible]
बाळापण
थूं [illegible]

हरख होवै बिरखा पांणी सूं
रूंखां, बेलां, फूलां, पौदां, हरी हरी घास सू
तावड़ा सूं, चांदणी सू,
वायरा सूं, आंधी-तूफांन सू
रात रा अंधारा सूं, दिन रा चन्नाणा सूं
इण विराट सिरजणा री अंतरधारा
जलम, मरण, बिगसाव सू
अर इण नरतन री मूळ सत्ता रा दरसण सू !

पण लाखां लाख लोग कोनी देख्यो थनै
कोनी रमातो थनै खोळा में ।
अेक वार वेरै प्रांणां में ई आवै
तो जीवण रा बरस दूणा तिगणा बध जावै !

पाप-बोध

जाग बोध पाप रा !
आतमा नै बोध
जिणसू पड़ै उणमे दाग काळा
रात दिन थूं चूंठिया भर चेतना रै
डरै जिण सूं जुलम करतो जीव
झिझकै गुन्हा करतो !

आतमा सोरी धणी है इण जगत में
कुण सजा दै बावळी नै
सजा तो मन, देह झेलै न्याव री
अर पीड़ दूजा नै पुगावण रा करम री !

जाग सिग्या पाप री
थूं वेदना दै आतमा नै अर बचालै
आ मिड़ण लागी अबूझी

अेक ई उपचार है उद्धार रो
थू जाग काळा बोध कोरी चेतना रा
पाप री ओळख करा दै आतमा नैं ।

त्याग

आद पूरण भोग, तापस त्याग

कर चुक्यां हां भोग छिण रो, अणत रो म्हैं
रूप रस रो, गंध रो,
मोहिनि निजर रो, परस, वांणी रो
रतन, धन, संपदा रो
पुरुस नारी रो
गगन, धरती, अगन रो, पवन रो,
इण उदध भर मेघ जळ रो
धापग्या हां
आद पूरण भोग, तापस त्याग
म्हांनै भोग सूं थूं ई उबारै

बरू कै ज्यूं ज्यूं भोग भोग्या
भोग री बधगी तिरस रै कारणैं
थाकी उमर, थाकगो बदन,
दो नैण डूबग्या खाडा मे
पण बोझ ई कोनी उठावै
भोग री परमाद रा परमाण जिनरो अब न भावै

म्हैं समझग्या
भुगतणो ई भोग रो फळ होवै जगत में
त्याग रो आणद भोगां सूं सवायो
त्याग ई है भोग साचो
आद पूरण भोग तापस त्याग ।

प्रेरणा

आव म्हारी प्रेरणा परणी-पताई ।

छूटतां ई हाथ हथलेवो
घरां आई महकती मेड़िया में
घणी भोळी अर अबूझी,
जागती,
कीं सोधती, कीं समझती
थू अरथ सू अणजांण,
डरियोड़ी, झिझकती ।
म्है निरखतो रूप निरमळ
जगत में बधग्यो सुरग री सीव ताई

आज म्हारा पथरणा में घोर खीचती
अडोळी, धापियोड़ी,
यूं पसरगो खुद, म्हनै अब कुण जगावै ?
कुण मंगावै मांग मुकताहळ समद सूं
कुण तुडावै फुणगिया टंकिया सितारा
कुण म्हनै बिड़दाय, म्हारो बळ बधावै

आज पाछी गरज पड़गी है म्हनै
अे प्रेरणा !
थू सेज म्हारी आव
थोड़ी झिझकती, सपना सजाती,
सोधती, भोळी, अबूझी

भर सवागण 'मांग मे सिंदूर म्हारै
आव म्हारी प्रेरणा परणी-पताई ।

तिरस

जाग अणछक तिरस
थू भरिया समद सी
नैण, होठां, कंठ में,
तन-पोर में, नख-केस में, मन-प्रांण में
आ बैठ अणछक तिरस थू भरिया समद सी

थू लगा प्याऊ
कनक झारां अटूटी धार,
म्हारा प्रांण तिरपत होवै उठा लग कूढ़ियां जा
दरसणां सूं धापणो अधरम गिणीजै,
नैण सैंजळ होय थारो रूप पीवै जुगजुगां सूं
होठ थारो मद परस सिकुडया न दाझ्या
कंठ में ऊग्या न कांटा
रोम में रसभीड़ बोलै—
'और कूंढ़ो, और पावो'
कुण होवै तिरपत चळू भर दरसणां सूं
अेक चिमटी परस सूं, कण हेत सूं

हाय जीवण है कितो व्यापक
अलेखां रूप रस में
और पल्लो बेंत भर रो खोळ भरवा नैं
कठै मावै अणत आकास
नेतर दोय, काया पांच छ फुट,
अेक कोरो मन भटकतो

पण छक्योड़ा मिनख है अणगिण जगत में
जीवता ई जे मरयोड़ा ।
जाग उण में
जाग अणछक तिरस थूं भरिया समद सी!

संकोच

आव मन संकोच सब रै ।
मारतां कोई मिनख अणजांण नै,
अर चोरतां धन, दाबता धरती पराई,
पेट माथै मार लातां—
पटकता परण्या गरभ नै,
वैन सू धंधो करातां अंग रो,
अर टाबरां नै कूटता,
मारतां बिन बात कोई जीव नै
आव मन संकोच सब रै

मिनख है मूघो घणो
वै कैयग्या ग्यांनी
कै लख चौरासी भटकता जूण मिनखां री मिलै
थूं रंग रा कर भेद
जातां रा, धरम रा, वरग रा
दोयण वणांतो, कर मना संकोच

कर मनां संकोच
धन रै कारणे धारा बदळग्या
हेत रा ब्यौहार
थूं छळकपट, चोरी, लाव-लालच मे घिरीज्यो
मिनख रो दूवै पसीनो
सींव धरती री उकेरी,
देस म्हारो देस थारो कै भिड़ाई फौज
लाखां नै मराया
फगत थारी मूंछ अर तुरा किलंगी
अखत राखण

थूं मिनख रो कुण
बता यूं देस रो कुण
जद कुटम रो ई नहीं है ?
अै धुरै बूढ़ा बडेरा

ये कणेडी में मड़े दो भेद-भाई !
ये बधाई के बधाई—
जद जिनग बणगी मुगाई ?
पूं धरम कांई कमाळे ?
काम जद विपरीत करतो होवै जगत रै
अर करै विपरीत कुदरत रै !
आय मन सकोच सब रै !

उपज

आ उपज !
सौ सौ गुणी वध ।

आ, धरा सूं, गिगन सूं,
नित कळ मसीनां सूं,
मिनख रै बूकियां रो, मन-मगज रो जोर लै
विग्यांन नै इण कांम गाड़ी जोत
कर दै कनक मूंघी रज
आ उपज ! सौ सौ गुणी सज !

म्हैं गिणां सख्या अरब में
बस अरब हां पांच
पांच मुंडा जीमवा नै,
पांच तन, सुख पोखवा नै
बस अरब हा पाच

पण है हाथ म्हारा दस अड़ब
दस अड़ब पग है, पंख है,
अर ग्यांन रा घर दस अड़ब

चीज रै लारै फिरै जद चीज री कीमत
आ उपज
सौ सौ गुणी वध ।

खेम

आव म्हारी खेम
पूछण आयग्या मूसळ लियोड़ा, बारणा खड़खावता,
वै रात आधी, गांव रा जूना मंसाणा सूं

आव म्हारी खेम
लैली म्हैं दवायां डाक्टरां री
बैद रा घासा पिया
ली गोळियां म्हैं साव राई ज्यूं हकीमा री
आव म्हारी खेम
म्हारै मन तणावां अर अपूरण वासनावां री
जगां खाली
आव म्हारी खेम
म्हैं वरजिस करूं नित ऊठ वेगो
सास साधू, योग रा आसण लगाऊं

आव म्हारी खेम
धन, घर में धरचोड़ो मोकळो
जुद्ध म्हारो देस कोई राज सूं कोनी करै
म्हैं नेम राखां, धरम पाळां

आव म्हारी खेम
म्हैं कुदरत जिवावै ज्यूं जिऊं
म्हैं अेक सुर इण रागणी रो
अेक तोड़ो ताळ इण नरतन तणो हूं
रूप रो आकार इणरी धूप-छीया रो
ज्यूं निर्भै वस इण धरा रो नेम
आव म्हारी खेम ।

गाढ़

आव गाढ़
बैठ म्हारा हीया रा हिंडोळा में

अै बीखा ई बीखा रा जंगळ
हरख ई हरख रा सरवर
जठीनै देखूं, उठीनै—
अजांण्या असैंधा असमांन
घणो डरचोड़ो है मिनख रो आपाण
आखी ऊमर बीत जावै फळ री उडीक में
आव गाढ़ ! थारै कारण ई है पगां में करार!

घटना-दुरघटना, सगळी गई परी होणी रै हाथां
कुण जांणै कांईं होवैला आगलै पल-छिण,
टूटै है बीजळी, गाजै है मेघ,
बाजै है वायरा रा गुणचास बाजणा,
अंधारा रा इण अमावस महरांण में—
थारै पांण ई दीसैला कालै रो ऊगतो भांण
चंचळ प्रांणां रो धड़को थांम
थारै पांण ई जागणो है म्हानै—
करणो है जाप
आव गाढ़ !

ईसको

आव ईसका !
जे की म्हारो है जीवण में, वो गमै नहीं,
कोई खोस नीं ले जावै,
म्हैं करूं रखवाळी, थारै साथै ईसका

कैड़ो ई ओपरो
कैड़ो ई स्वारथी लागो म्हारो वरताव
म्हारी चिरमियां, म्हारा गड्डा-कंचा,
म्हारो वरतो, म्हारी पाटी,
घणी प्यारी है
थारै कारण ई रखाव है, म्हारा ईसका

थूं रसायण है
प्रेम, घ्रिणा, दुख अर डर रो
थारै आयां म्हैं सम्हाळू म्हारी सिरड
म्हारी रीस, म्हारी बांण कुबांण,
म्हारी चिड़
म्हारी प्रीत कोई क्यूं ले जावै
आव ईसका, म्हैं राखूं फगत म्हारै तांईं

भगवांन रो ई दूजो नांम ईसको
इण कारण बाइबल बतावै—
कोई दूजा देव नै मत धोको,
सगळा धरमां नै छोड़, आ जावो म्हारी अेकली सरण मे
घणो प्रेय है थूं ईसका
आव ईसका ।

बस्ती

आव बस्ती
अेकला तो ऊभग्या इण सून रा पसराव मे,
आ मून कद तांणो सुहावै !
बात बंतळ रोज खुद सूं ई करै कितरी
अबे तो आत्महित्या करण री मन में उमावै !

ला, मिनख, लड़ता, झगड़ता, प्रीत करता,
आव बंतळ बात करता को पडोसी,

ईसका में जीवता, मरता, जलमता,
रीझता, नीहाळता, भर भर नयण वै,
लुक छिप्योड़ा आपरा घर डागळां सूं-
वारणां सूं—
और कूची रा कियोड़ा काच-कांणां सूं

जी अमूझण लागग्यो है,
ला पसेवो मिनख रा तन मन बदन रो
अेक गौरम !
म्हैं तिसायां हां, मिनख रो दूध म्हांनै पा,
विण साथै, करा मावो, पियां मदवो,
हरख गू नाच गावां,
पीड़ होवै तो रोयला साथै
कठा लग वीण, पोथी, छाव सैं बैठां
फगत आकास रै हेठै,
नियां रोटी,
पगरता रेत रा मरु में अकेला जीव म्हैं ?
आव वस्ती !

न्याव

आव न्याव !
जलम्या नै होया फगत छ दिन
कोई मजा लिखग्यो म्हारी पूठ माथै
पर कोनी सकू, फगत भुगत रह्यो हूं
जुग रा जुग बीतग्या
म्हारो मुन्नो तो बतावै—आव न्याव !

आज्यो दिन बढ़ मजूरी, पूजू पसीनो
मैलो है मन मगज अर अंग म्हारा
फेर ई धरम री रोटी बट ले जावै धनदिगार !
आव न्याव !

क्यूं कोनी म्हारा कमीज रै अदीठ जेबां
कांई कारण, कोनी बेंका में बेनामी खातो म्हारो
गुंडा क्यूं कोनी करै म्हारी मदद
चौकर वडग्या म्हारा मेल मे, हर कोई रा दाव !
आव न्याव !

अै झूठा, छिछोरा,
नट और नटणिया करैला राज ?
अै देस नै कुतर खावणिया तस्कर होवैला साहूकार ?
अै फरजी, हाका करणिया,
कद सूं बणग्या मौजीज ?
म्हैं हमेस करूंला काम ?
अै हमेस करैला टैलीफोन ?
आ व्यवस्था तो पोची है साव !
आव न्याव !

आजादी

आव आजादी !
मुगत कर मिनख नै
दूजा मिनख री राजगती दासता सूं !
मुगत कर धन री रगत पीवणी चतराई सूं !
मुगत कर भूख सूं, गरीबी सूं,
बेकारी निवरमाई सूं !
मुगत कर चमड़ी रै रंग रा दीसता अन्याव सूं !
मुगत कर धरम रा, जात रा, देस रा आदरस सूं
मुगत कर नाग, रोग, मरण रा डर सूं
मुगत कर कुदरत री [illegible] सूं
मुगत कर मरीचा सूं
दरिद्रता सूं, [illegible] सूं

मुगत कर बरसां वासी धारणावां सूं
मुगत कर इण भांत—
कै म्हैं खुद नै सोधलां,
जीवलां खुद री जीवणी !
अर इत्ती विराट करलां चेतना नै–
कै म्हारै मांय कर जलमै नया ब्रह्मांड;
नया धरम, नया ईस्वर !
आव आजादी !

प्राथना

प्राथना करूं देवां, प्राथना करूं !

आवो,
आप आप रै भोळायोड़ा करो कांम,
मिनख नै करो सुखी,
करो इण जग्य नै सफळ !

टावर ज्यूं लड़णो छोड़–
मिनख अर कुदरत करै पूरण अेक दूजां नै,
विग्रह अर तणाव टूटै—
मिनखां रै सिरज्योड़ा समाज रै संबंधां रा,
आत्मा होवै नचीती, प्रांणां नै मिलै फुरसत,
इण ब्रह्मांड में सिरजां देवस्रिस्टी रा जुग !
देही अर चेतना वधै
आप सगळां रै पधारयां ई !

म्हैं तो चढ़ाऊं हूं पुजापो
सबध रो, रूपां रो, रंगां रो,
सुरां रो, सौरम रो, सवादां रो,
सरधा रो, भगती रो, निरमल भावनावां रो,
हेत रो !
म्हारी अरज सीकारो,
आवो देवां ! म्हारै जग्य में आवो ! □

'पण काईं इतो सरळ है भावना सूं जुड़्योड़ो, संग्यारण टूटणो ? काईं रूप, रस, गंध, सीत सूं कोनी हो सकै संग्यारण ? मत मिळो, मत बोलो, मन देखो अेक दूजा नै, तो ई अेक दूजा री खेम कामना, अेक दूजा रा गुणां अवगुणां रो अहसास, अेक दूजा रै हेत रो बोध अर जाणण रो गुमान, काईं अेक दूजा नै भावनालोक में जुड़्योड़ा कोनी राख सकै ?'

पुजापो

1987

तो कांईं म्हारै खोळा रो पल्लो, रै जावैला खाली ?
थे मुळकोला कोई सांम्है
कांई म्हैं कोनी रीझूंला थारै मन रा उजळास मायँ?
अर कांईं थारो परसाद,
कोई भगत म्हारी निजर लागां बिना,
ले जा सकैला आपरै घरै ?

थे आवोला बगीचा में–
तो कांई कोरी घास ई बिछैला थारा चरणां हेठै ?
थे जागता बैठा होवोला रात रा पिलंग माथै
कांईं म्हैं कोनी होऊंला छिपियोड़ा अंधारा में ?
चांद तारां री जगमगती उजास में ?

थे जद ऊग समंदर रै कांठै
निजरां पसारोला
जळ थळ गिगन रा मिलण-खितिज तांईं
कांईं म्हैं कोनी होऊंला
उडता पांखी ज्यूं ढळता सूरज रै सांम्है ?

थे कांईं सोचो !

मिलण

थांनै मिलण रो कोनी उमावो म्हांनै !
लोग देखै, ईसको करै,
म्हनै होवै गुमेज,
म्हैं करूं थारा बखांण, थे लाजो,
सामै अर पीठ पिछाड़ी
मोह तो मान घणहूं होवै जद ई
जीवण घट भरै रस रा रसायण सूं

थांरा गीत गावतो फिरूं मैंफल मैंफल,
आंसू रा धारोळा उतरै म्हारै गालां माथै
हिचकियां आवै म्हनै वेळा कुवेळा
थांनै चितारता, पांतर जाऊ म्हैं
इण संसार में म्हारै जीवण रो अरथ !
तो लोग जांणै ई म्हारी प्रीत,
अर प्रीत रा प्रभू—थांनै
छानै मिलण रो कोनी उमावो म्हांनैं

वार तिंवार तो मिल जाया करो मोबीडा
उण दिन तो सगळा ई मिलै अेक दूजा सू-
राखी नै भाई वैन,
सराध मे जीवता मरियोडा,
होळी नै रगा रै मिस,
दिवाळी नै रांमां सांमा करण नै,
मेळा में, जीमण में, खेल में, ख्याल में,
सभा में भासण में,
हाट वजार में, तीरथ मे,
चवड़ै धाड़ै कठै ई मिलो भलां ई-
छानै मिलण रो कोनी उमावो म्हांनैं ।

कांमण

दड़ी नै ऊंची फेंकणी अर पाछी झेपणी,
ओ कांमण रो छिण होया करै

बूढ़ा मास्टर रो मिलणो अर वोलणो-
'हाय कित्तो मोटो होयग्यो यूं ?
कैड़ो म्हारा खोळा मे दुवक जावतो
जद गाजता मेघ अर पळकती विजळी
यूं तो जवांन होयग्यो रे !'

तो कांईं म्हारै खोळा रो पल्लो, रै जावैला खाली ?
थे मुळकोला कोई सांम्है
कांई म्हैं कोनी रीझूंला थांरै मन रा उजळास माथै?
अर कांईं थांरो परसाद,
कोई भगत म्हारी निजर लागां बिना,
ले जा सकैला आपरै घरै ?

थे आवोला बगीचा में–
तो कांई कोरी घास ई बिछैला थांरा चरणां हेठै ?
थे *जागता बैठा होवोला रात रा* पिलंग माथै
कांईं म्हैं कोनी होऊंला छिपियोड़ा अंधारा में ?
चांद तारां री जगमगती उजास में ?

थे जद ऊग समंदर रै कांठै
निजरां पसारोला
जळ थळ गिगन रा मिलण-खितिज तांईं
कांईं म्है कोनी होऊंला
उडता पांखी ज्यूं ढळता सूरज रै सांम्है ?

थे कांईं सोचो !

मिलण

छांनै मिलण रो कोनी उमावो म्हांनै !
लोग देखै, ईसको करै,
म्हनें होवै गुमेज,
म्हैं करूं थांरा बखांण, थे लाजो,
रूबरू अर पीठ पिछाड़ी
कोड तो साव चवड़ै होवै जद ई
जीवण घट भरै रस रा रसायण सूं

थांरा गीत गावतो फिरूं मैफल मैफल,
आंसू रा धारोळा उतरै म्हारै गालां माथै
हिचकियां आवै म्हनैं वेळा कुवेळा
थानै चितारतां, पांतर जाऊं म्है
इण संसार में म्हारै जीवण रो अरथ !
तो लोग जांणै ई म्हारी प्रीत,
अर प्रीत रा प्रभू—थानै
छांनै मिलण रो कोनी उमावो म्हांनै

वार तिवार तो मिल जाया करो मोबीड़ा
उण दिन तो सगळा ई मिलै अेक दूजा सू—
राखी नै भाई वैन,
सराध में जीवता मरियोड़ा,
होळी नै रंगां रै मिस,
दिवाळी नै रांमां सांमा करण नै,
मेळा में, जीमण में, खेल में, ख्याल में,
सभा में भासण में,
हाट बजार मे, तीरथ में,
चवड़ै धाड़ै कठै ई मिलो भला ई—
छानै मिलण रो कोनी उमावो म्हानै ।

कांमण

दड़ी नै ऊंची फेंकणी अर पाछी झेपणी,
ओ कांमण रो छिण होया करै

बूढा मास्टर रो मिलणो अर बोलणो—
'हाय कित्तो मोटो होयग्यो थू ?
केड़ो म्हारा खोळा में दुबक जावतो
जद गाजता मेघ अर पळकती बिजळी
थूं तो जवांन होयग्यो रे !'

अर म्हारा टाबरां नै बतावणो म्हारो–
'अै म्हारा गुरुजी है !
बाळापण नैं उछाळ, पाछो झेपण रो
अैड़ो ई अेक कांमणगारो छिण होवै !

फेर फेर सोधूं ओ ई कांमण रो अलौकिक छिण,
जलम, जीवण अर जवांनी रो–
जद म्है बताऊं लोगां नैं,
आ म्हारी मांनेतण ही,
म्हें रह्या करतो इण कनै,
घर सूं धक्का देय काढ्यां पैलां !
जीम्या करतो इणरै हाथां सूं
कचकोळियां रै खणकारै !
आ करती म्हारा लाड, म्हारा कोड,
म्है सिणगार हा अेक दूजा रा सेजां में
म्है सराई पोसाकां अेक दूजा री
उडीक्या अेक दूजा नै,
अर घुळग्या अेक दूजा में–
छाछ अर माखण ज्यूं,
मिसरी ज्यूं मुडा में

कुण जांणै
किसी गाज रै गरजण
कीकर छिटक पड़्या आगा अेक दूजा सूं
नदी रा दो पाटां ज्यूं,
कै तरसग्या दरसण नै !
बांसरी अर मोर पांख रैयगी फगत
म्हारै कनै, पूजा करण नै
अर म्हारै सुखी जीवण री कांमना -
उणरा हीया में !

कांई बताऊं !
कोई देस में, कोई काळ में, कोई रूप में,
म्हें अेक ई हा दोनूं !

हठ

अठा सूं कठै ?
आ परकमा तो पूरी होयगी लागै
मरणांत माथै आयग्यो है मारग
जद थे कोनी देवो आऊकार–
तो कठै चढाऊं फूलां री अंजळी !
हेठै धरदू बांसरी ?
भूल जाऊं गायोड़ा गीत ?
फेंकूं आरती री थाळी समद रै मझधार ?

कै लिखू नया गीत
पूजा सजाऊं पाछो
पाछो करूं जातरा जलम सूं जठै
जठा सूं पैली करी ही ?

थानै अर थारा मिजाज नै बदळण री
तो संभावना कोनी
अर ना बदळैला म्हारो टरको
वै रा वै सभाव है दोना रा !

फगत साधन बदळ सकूं
रीझ री जगा रीस,
गीत री जगां गाळियां,
फूलां री जगा भाटा !

थांनै मायो करणो पड़ैला म्हानै
पूरी करणी पड़ैला परकमा म्हारै माथै !
म्हैं जिसी मायली है सापना,
असाध्य कोनी होवण दूंला -
थारा ओळखा बोलण सूं !
बोनूला म्हैं अठा सूं अठै
अठा सूं कठै ?

लोरी

सोजा, नचीती हो सुयजा !
म्हैं जगाय दूला थनै दिन ऊगां
केसां में आंगळियां उळझाय,
हरजस गाय,
गिलगिली कर पगथळी रै
गाल माथै चूमो देय !
अबै सोजा !

रात घणी चढ़गी
थूं आंख में कस ई कोनी घालैला
तो वगत माथै ऊठैला कीकर
अर आखो दिन आंख में जागण भर
कांम कीकर करैला ?
थाकगी होवैला म्हारी व्हाल !
अबै सोजा !

वाट जोवै सिरांणै ऊभा सपना
मन री अणमणी वासना वाट जोवै थारै निकळण री !
विछावणा नै ई हर आवै, थारै निवास री,
तकिया नै माथा रा केसां रै सौरम री,
अर रजाई नै थारै अंग रै च्यारूंमेर लिपटण री !
मत तड़पा कोई नै
वतो वडो कर अर सोजा ।

माध्यम

म्हारा गीत पावड़िया कोनी थारै मिंदर रा
जिका चढ़, म्हैं आऊं थारै अंतरपटां मारै !
म्हारा गीत कोनी रेसम री डोर

जिकी नैं पकड़,
थारी लेय चढ़ जाऊं
थारैं हियै रा डीगोड़ा डूगर
म्हारा गीत कोनी तीरथ....जळ
जिका में न्हाय,
म्हैं निरमळ होय जाऊं तन मन सूं

जे चुगणो पड़ै म्हनै
दोनां मांय सूं अेक,
तो निरचै जांण, म्हारी जान
कोनी चुणूं थानैं, गीतां नैं बदळै
सवाल तो थानैं दोनां नैं साधै राखण रो है
गीत कोनी है मारफत
सबद म्हारी संपूरण चेतना है,
अर गीत है उण चेतना रो राग, अनुराग, सिणगार
गीत म्हैं खुद हूं
अर थै हो सेवट पराया
इण सारू गीतां सारै कोनी मांगूं थानैं
म्हारा गीत रमबड़ा कोनी थानैं रमण रा
म्हारा गीत फूल कोनी थारै चढ़ावण रा
म्हारा गीत पायदिया कोनी ।

[illegible]

आज थारी याद रोम रोम फूटै
कोई हेताळू आयो होसी मिलण नैं
[illegible]

आज [illegible]
कोई [illegible]
[illegible]

आज थांरा प्रांण झूमैं है गहळ में
कोई मेळू रातवासो कारण नै रूकग्यो लागै
थांरी मेड़ी में !
जिका नैं वधावण नै
थे सिणगार सजायो च्यारूं भीतां रै

आज थे पुसब ज्यूं बिना कारण हंस पड़्या
दिन ऊगां, दिन ऊगां !
रात रा कोई अणत कथा कंयग्या लागै,
चांद तारा थारा कांनां में

आज थे देही में कोनी लागो
किसी किरणा री चादी डोर फेंक—
थांनै बुला लिया दीसै चंवरी में कोई,
जिकां रा अमर सवाग री टेक लियां
बैठा हा थै माथा में अटाळ घालियां

आज थे अणमीत फूटरा लागो !

परस

थांरा तो हिया सूं
अेक गुलावी किरण रो वारै निकळणो
अर म्हारै प्रांणां रा पोयण रो खिलणो
कैंड़ा होया जैं स्री क्रिस्णा

सौरम रो अेक आखो बादळो
पसरग्यो सरवर माथै,
गैली पवन रमण लागगी म्हारा गावां सूं
उडीकै हा भंवरा
उड़ उड़ झांकण लागग्या म्हारा हिया में
मंडरावण लागग्या म्हारा घर रै ओळूं दोळूं

अर गूंज गूंज मचायो इत्तो कळरव, म्हारा प्रांणां में
कै बिसरग्यो म्हनैं म्हारै विगसण रो उमावो
अर म्हारै ध्यांन री अेकाग्रता टूट
म्हनैं दाझणो पड़्यो थांरी अलेखां
आकरी किरणां में

थांरै दियोड़ा रूप नैं
देख ई कोनी सकी
नीचै मुंडो झुकाय दरपण में
नाच ई कोनी पाई इण लाभ रा मोद में
गा कोनी सकी थारै म्हारै सगपण रा सीठणा
इण पैली ऊगग्यो सिंझा रा गिगन रो तारो
अर म्हनैं बंद करणो पड़्यो
म्हारै रूप विगसाव रो आकार
म्हारै प्रांण-पराग री मजूस
थांरो परस, अपरस ई रह्यो म्हारा जीवण में ।

बस्ती

इण बस्ती में अबै कांई रैवणो
आखो दिन थे रैवो बारै
अर आखी रात थांरा बारणा रैवै बंद
इण गळी सूं तो ऊठगी थारी सौरम
अबै इण बस्ती में कांई रैवणो

फगत रैयगी है थांरी निरमळ गति अर आवेग,
झरणा नदियां में,
जिकी कोनी मावै म्हारै सामरथ री झोळी में
फगत रैयगी है थांरै प्रांणां री पुलक,
दिखणी पूंन में,
जिकी कोनी बंधै म्हारी भुजावां में

पसत रंगगी है थारी देहाभ,
अगास रै रंगणी आंगळ मे,
जिको म्हैं परस कोनी सकूं
बस सुणीजै थारी हंसी फूलां मे
जिको कोनी मावै म्हारी बाळी मे
थैं कोयल रा कंठा में गावो
पण कोनी समझूं म्हैं
सुर या सबद थारी भासा रा
जुड़ाव तो कटग्यो हो आंवळ नाळ कटतां ई
थारै कनै रैवण रो उछाव ई रीतग्यो अबै तो
अबै कांई रैवणो इण बस्ती में ।

कुण

अेक दिन भेळी होई पंचायत
अर म्हारै कनै मांगियो खुलासो
म्हारै सबंधा रो, थारै साथै

साचांणी आपां कांई लागां अेक दूजा रै ?
कांई लागै हाथ पग, पेट, आंख,
मगज, हीयो, रगत, म्हारै ?
कांई लागै चेतना म्हारै ?
कांई लागू चेतना रै म्है ?

अै हरख, सोग,
राग, प्रेम, क्रोध, कांम,
सगळा मनोविकार कांई लागै कोई रै ?

कांई लागै कुदरत मिनख रै ?
हरिया रूंख, वैवतो जळ,
हथिणी गत हालती पून,

धरती, अकास, अगन ?
कोई अणत, कोई छिण भर ?
कोई विराट, कोई चिरमी गट्टो

समाज में ई कुण लागै किण रै ?
जात, धरम, परिवार,
सगळां री रचना होई आपां रा अनाड़ी हाथां सू ?
अै कद साधै कोई नै, अै कद ढाबै कोई नै ?

इण विराट सुदरता नै
म्है कोनी चितारिया पति ज्यू
अेकला म्हारा कोनी बणाया
भाई, भायला, ज्यूं, अणजांण ज्यू,
मालक ज्यूं, ठाकर ज्यू,
राजावां रा राजा ज्यू
म्हैं समायोड़ो हूं इण अणत में
ज्यूं ओ विसांई खावै म्हारै मांय !
म्हारो आकरसण-विकरसण,
निपजै आपरा खुद रा नेमां सू !
म्है अेक दूजा नै सोधां, लाधां अर समझां,
आप आप रा संस्कारा सू !

सुंदरता में, करुणा में, प्रेम में
उणनै थेपडूं म्है !
तो निरछळ, निरकपट अंतर में,
रातवासो करै वै ई
घुळियोड़ा अेक दूजा में ?
कांई बखाण करूं म्है म्हारै संबंधां रा,
पंचां नै कांई बताऊं ?

भूलणो

ज्यू भूलग्या थे
सिरिस्टि री रचना करै, उणरै

अर मतै मतै वधण दिया सगळां नै
परायां नै वस में कर, दूजां नै मार दूजां रो नास कर
थे तो भूलग्या होवोला
अेक दिन दरसण देय,
थै म्हारै नैणां में जगाई अेक उडीक,
म्हनै वतळाय,
थै म्हारै मन में जगाई अेक तिरस,
म्हनै परस कर,
म्हारी देही नै जगाय दी थे
अेक सवेदन भरी वीणा री झणकार में!
क्यू कै थारी आ बाण है
सगळा प्रेम प्राथनावां में जमियोड़ा
हेताळुवां साथै रोजीना, इकसार!

पण म्हनै याद है हाल
वै वीजळ दरसण रा झमका,
वै परस रा राग रंग रचिया छिण,
जद म्है, विना आगली पाछली रो विचार कियां
धारली मन में
के थांनै म्हारै वारै कोनी रैवण दूंला
अर म्हारी पूजा सूं
थांरी मानता नै कर दूला इत्ती अलौकिक
के थांरा गीत गायां ई जाऊला
जलम जलम!
जठा लग कोनी होवै अेकाकार
आपां रा आपा,
अर मिट जावै आपांरा न्यारा न्यारा आपाण!
थै तो भूलग्या होस्यो!

पुजापो

पुजापो संधाण है आणंद अरण रो;
जठै म्हारो वण सकै आसरम,

चीड अर देवदार रा रूंखां बीच,
हरिया हरिया आसापाला री
निरमल ऊंची उठांण में !
जठै किस्तूरी मिरगलां साथै
भटक सकै म्हारो मन !
जठै घिर घिर आवै करुणा रा मेघ !
खिलै फूल होठां में,
जठै उणनै कोई तोड़ै-मसोसै कोनी !
जिकां में रळकता हेत नीझरा मे
म्है बुझाऊं तिरस
अर उमड़ता अंधारा मे
हरी हरी गीली घास माथै लुट सकूं !

थारो म्हनै देखणो भरपूर निजरां,
मुळकणो
चन्नण देही री रूंवाळी रो सिहरणो,
म्हनै देयग्यो गंध रो गिगनार !
थांरी बोल-बतळावण, गीत- संगीत, परस,
म्हनै करग्यो सबद विहूणो,
बीजळ सैचांनण !
थांरी मनवारा, हेत-सत्कार, पूछ परख सूं
म्है लैरीजतो रह्यो सरप ज्यूं;
अर गरब करतो रह्यो थांरी ओळखांण रो,
मिजाज पुरसी रो !
अछेही आणंद रो मारग हो ओ
इण निरजण अरण में !

आणंद सरोवर रा ओटा माथै
म्हैं सावण बैठग्यो विसांई
तो इण घिर जळ रा लाल पोयणां ज्यूं
थांरी पीड़ सूं हुई म्हारी चौनिजरी !
थनै सुखी करण रा कळाप
म्हनै बटाऊ ज्यूं आगै बधण रो दियो कारण

म्हैं घणा सपना माळिया;
अर सतदळां रै हेठै अंतरलोक में पूगण रो,
पीळा पराग नैं संसरण रो उमायो,
म्हनैं देयग्यो आणंद पुरवाई रो परस !

घणो मोद होवै लोगां में ईसको जगावण में,
गहळ रा आणद है लोगां रा बोल सुणण में
कोई आगळो दिखावै—
तो लागै जाणै तारो टूटियो है अकास मे
अर रेग गिजगी है धनक ओप री

मुडो मरोड, अवोल्णा, मौन,
म्हारा हीया नै पुगाय दियो आणंद री माठ ताईं
थारो कल्याणो म्हनैं देयायो—
मामन जैडा सबद, कविता री कुरळाट मे
अनन्त आणद भोग्यो है म्है थारी उडीक रो
ओ हेत, हेत री तड़प,
पूजा, आराधना, कल्पना, कामना,
अर म्हारो निम्मर समरपण
म्हारी प्रकृति नै पुगाय दी है
उण मोहनो परत्र ध्यानी, देवी मना ताईं
जठै आणदमय है वाल्मी अर मायवी
अंतस ऊरजा
म्है आणद समाय मे हू
इण आणद अन्न मे ।